www.thearyasamaj.org

॥ओ३म्॥

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अरावणः॥

आर्य संकल्प

(बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख-पत्र)

वर्ष-36 सितम्बर अंक-9

महर्षि दयानन्द

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्यालय : श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला, पटना-4 (बिहार)

www.thearyasamaj.org

आर्य संकल्प

सम्पादक
रमेन्द्र कुमार गुप्ता
मो. 9334184136

सह सम्पादक
संजय सत्यार्थी
मो. 9006166168
प्रेम कुमार आर्य
मो. 9570913817

सम्पादक मंडल
पं० व्यासनन्दन शास्त्री
श्री बिन्देश्वरी शर्मा
मो. 8544088138

संरक्षक
गंगा प्रसाद
सभा प्रधान

कोषाध्यक्ष
सत्यदेव गुप्ता
स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
श्री मुनीश्वरानन्द भवन
नयाटोला, पटना-800 004
दूरभाष : 07488199737
E-mail_aryasankalp3@gmail.com
सदस्यता शुल्क
एक प्रति : 15/-
वार्षिक : 120/-

मुद्रक :
जय उमा प्रिन्टर्स
मो. 9430246879

संपादकीय

धैर्य से जीवन निर्माण

व्यक्ति अगर चाहता है कि मैं संसार सागर को तैर कर पार कर जाऊँ, सफलता हमारा कदम चूमें, जीवन निरंतर उन्नति के पंथ पर अग्रसर हो, यशस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी बनकर सूर्य के समान संसार को प्रकाशित करें, तो इसके लिये धर्म का प्रथम पुष्प घृति अर्थात् धैर्य को जीवन में उद्‌बुद्ध करें। जैसे यज्ञ को उद्‌बुद्ध करने के लिये सर्व प्रथम अग्नि की आवश्यकता होती है उसी प्रकार धैर्य से जीवन का निर्माण प्रारम्भ होता है। एक विद्यार्थी को एक कक्षा से दूसरी कक्षा में जाने के लिये एक वर्ष तक धैर्य के साथ पढ़ना पड़ता है, एक ही विषय को बार-बार पढ़ना पड़ता है, तब जाकर सफलता मिलती है। एक व्यापारी नई दुकान खोलता है तो उसे जमाने में महीनों या वर्षों का समय लगता है। अगर इस वीर्य व्यापारी धैर्य छोड़ दे तो व्यापार भी असफल हो जाता है।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि धैर्य धर्म की नींव होती है अगर नीव मजबूत हो तो कर्तव्य पथ से कोई डिगा नहीं सकता। बड़े से बड़े मुसीबतों को सहने की शक्ति आ जाती है। इसी से जंग जीत सकते हैं और शत्रुओं को परास्त कर सकते है। महर्षि दयानन्द का जीवन इसका सफल उदाहरण है। ऋषि ने सत्य की खोज में न जाने कहाँ-कहाँ भटके, नदी, नाला, वन उपवन, मरूस्थल पहाड़, रेतीले नदी, बर्फीले पहाड़। किसी ने सांप फेंका, किसी ने गालियां दी, कवि ने कहा है-

कोई ईंट बरसाये, कोई जहर पिलाये राह में
पल भर न रूका योगी कि पग-पग बढ़ता गया।
आंधी बन आया जिस पेड़ को हिलाया।
वही जड़ से उखड़ता गया, कि पग-पग बढ़ता गया।

www.thearyasamaj.org

आर्य संकल्प

-: सूची :-

क्रम	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय	
2.	वेद मंत्र	1
3.	जीवन की समस्याओं का समाधान	2
4.	इण्डिया को भारत बनाने का प्रयास	10
5.	यज्ञानुष्ठान में आपकी भूलें	14
6.	परिवार का आधार	22
7.	कुमारों को संदेश	25
8.	कविता	29
9.	समाचार	30

इस पत्रिका में दिये गये लेख लेखकों के अपने विचार हैं, इससे सम्पादक का कोई सम्बन्ध नहीं है ।

सितम्बर

मृतक-श्राद्ध वर्जित

उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु
निधिषु प्रियेषु।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रु वन्तु
तेऽवन्त्वस्मान्॥

(यजु॰ 19.57)

शब्दार्थ- (सोम्यास:) चन्द्रमा के तुल्य शान्त, शम, दम आदि गुणों से युक्त (पितर:) माता, पिता, पितामह आदि पालकजन (बर्हिष्येषु) आसनों पर बैठने के लिए और (प्रियेषु निधिषु) प्रिय कोशों पर उनका सेवन करने के लिए (उपहूता:) आमन्त्रित किये जाते हैं। हमारे द्वारा बुलाये जाकर (ते आगमन्तु) वे लोग आएँ (ते इह श्रुवन्तु) यहाँ आकर वे हमारी बात सुनें (ते अधि ब्रुवन्तु) वे हमें उपदेश दें और (ते अस्मान् अवन्तु) वे हमारी रक्षा करें।

भावार्थ- पितर शब्द 'पा रक्षणे' धातु से सिद्ध होता है। जो पालन और रक्षण करने में समर्थ हो उसे पितर कहते हैं। प्रस्तुत मन्त्र में पितरों के सम्बन्ध में निम्न बातें कही गई हैं-

पितर लोग आसनों पर बैठने के लिए और कोशों का उपभोग करने के लिए निमन्त्रित किये जाते हैं। हमारे द्वारा आमन्त्रित वे पितर

1. हम लोगों के पास आएँ।
2. यहाँ आकर वे हमारी बात सुनें।
3. हम लोगों को अधिकारपूर्वक उपदेश दें और
5. हमारी रक्षा करें।

आना, सुनना, उपेदश देना और रक्षा करना जीवित में ही घट सकता है मरे हुए में नहीं, अत: सिद्ध हुआ कि पितर जीवित होते हैं। चारों वेदों में कहीं भी किसी मन्त्र में मृतक पितर का अथवा मरों के लिए श्राद्ध करने का विधान नहीं है। मृतक-श्राद्ध अवैदिक, कपोल-कल्पित और तर्करहित है।

■

www.thearyasamaj.org

जीवन की समस्याओं का सच्चा समाधान

-शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी का एक प्रवचन

जीवन की समस्याओं का समाधान किस धर्म से हो सकता है, यह विषय आप के सम्मुख रखना चाहता हूँ। हर एक धर्म वाला यह जानना चाहता है कि जीवन की समस्यायें क्या हैं तथा उनका समाधान क्या है। इसके लिये एक पृष्ठ भूमि की आवश्यकता है। जीवन क्या है लोग यह समझते ही नहीं। कुछ लोग कहते हैं कि अग्नि, जल, वायु आदि भूत इकटठे रखें और जीवन बन गया। जब जीवन समाप्त होगा तो ये सब भूत अलग-अलग हो जायेंगे। परन्तु भूतों के इकट्ठा करने से जीवन नहीं बनता। जब जीवन ही नहीं तो समस्यायें भी नहीं और समाधान भी नहीं।

जीवन के लिये यह बात याद रखने की है-

''ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:।'' (य० 25/13)

जो आत्मज्ञान का दाता बल प्रदाता है, जिसकी उपासना सब करते हैं। मेरा अभिप्राय मन्त्र के इतने ही खण्ड से है। हम अपने आपको नहीं जानते। हमने शरीर को ही आत्मा समझा हुआ है। भगवान कहता है समझो। जिस दुकानदार को अपने गल्ले की रोकड़ का पता नहीं तो दिन भर बिक्री करने के पश्चात् उसे सायं काल दिन भर की विक्री का क्या पता?

''दर्शन शास्त्र वेत्ताओं ने भूतों का अध्ययन करके यह समाधान किया है कि न भूत चैतन्य अग्नि, जल, वायु आदि भूत चेतन नहीं हैं, जड़ है।'' जब भूतों में जान नहीं है तो उनके मिलाने से भी उन में जीवन नहीं आ सकता। अग्नि, वायु आदि जड़ हैं, आकाश भी जड़ है। यदि अग्नि अथवा वायु में आकाश मिलाया जाये तो उनमें जीवन नहीं आ सकता। जरा ध्यान दीजिये एक उदाहरण से यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जायेगी। एक स्कूल में Entrance को पढ़ाने के लिये एक अध्यापक की आवश्यकता है। बहुत खोज करने पर भी Entrance के लिये अध्यापक नहीं मिलता। प्रबन्धक सोचते हैं 10 मिडल पास वालों के ज्ञान का Total मिडल ही होगा। इसी प्रकार जिन में ज्ञान नहीं उन दोनों को मिलाने से उनमें ज्ञान हो जाना असम्भव है। जीवन क्या है! जीवन की समस्यायें क्या हैं? तथा उनका समाधान क्या है यह वैदिक धर्म से ही मालूम होता है। वैदिक धर्म के अतिरिक्त अन्य मतावलम्बियों को जीवन का अर्थ ही पता नहीं। मुसलमानों से पूछा, जीवात्मा क्या है? उत्तर मिला ''खुदा का

www.thearyasamaj.org

हुकम।'' मुजस्मन क्या कभी हुकम हुआ करता है? ईसाई कहते है **"It is marely a truth."** प्राण ही जीवन है। परन्तु ये दोनों बातें ही अशुद्ध हैं। जीवन प्राणों का प्राण है जहाँ आत्मा है वहाँ परमात्मा है परन्तु जहाँ परमात्मा है वहाँ आत्मा का होना आवश्यक नहीं। वैदिक धर्म में जब कोई गृहस्थ नवजीवन को बुलाता है तो उसके लिये चेष्टा करता है। यहीं से जीवन आरम्भ होता है। जब गृहस्थ नया जीवन बुलाता है तो प्रार्थना करता है, हम देश की उन्नति करना चाहते हैं। हम शरीर से बलवान् आत्मा से पवित्र तथा मेधावी पुत्र चाहते हैं। पुत्र बुद्धि में गावदुम न हो। हाँ कुतुब मीनार की तरह हो सकता है ऊपर से सुकड़ा तथा नीचे से चौड़ा वह उन्नति की ओर जाये अवनति की ओर नहीं, अच्छे संस्कारों वाला हो।

नव जीवन आ गया। उसे पवित्रता से बुलाया गया विवाह के मन्त्रों में सन्तान के लिये प्रजा शब्द आया है। ऐसा पुत्र आये जो खानदान का कल्याण करने वाला हो। न Undesired हो। अनिच्छित न हो। जो चाहा नहीं होता वहाँ जीवन उल्टा हो जाता है तथा जीवन की समस्याएँ भी उल्टी हो जाती हैं। उदाहरणत: कुछ लड़के गेंद खेल रहे थे। एक लड़के ने अपने साथी को गेंद मारी। गेंद गूलर में जा लगी और गूलर गिर पड़ी यह गूलर अनिच्छित थी।

विशेष उद्देश्य से बच्चों को बुलायें, खेल में बच्चे न आयें।

एक अंग्रेजी लेखक ने लिखा है "Indians do not knew how to live and brings up their children." माता को गर्भाधान के पश्चात् विशेष कर सावधान रहना है। बुद्धि नाशक पदार्थों को छोड़ कर बल, बुद्धि पराक्रम तथा आरोग्यता प्रदान करने वाले, दूध, घृत, श्रेष्ठ अन्न आदि का सेवन करे। यदि माता ऐसा नहीं करती तो बुनियाद अच्छी नहीं बनती। माता को ऐसे कार्य करने चाहिये जिस से बच्चे के संस्कारों में अच्छे गुणों की वृद्धि हो। श्रोतों से अच्छी बातें सुने तथा नेत्रों से अच्छे दृश्य देखें। परन्तु आज उल्टा हो रहा है। सिनेमा ने सर्वनाश कर दिया है। सिनेमाओं द्वारा गन्दे गाने गाये जाते हैं। तथा गन्दे दृश्य दिखाये जाते हैं। यदि सिनेमाओं का सुधार होकर इन से ऐसे दृश्य दिखाये जायें कि माता गर्भ के समय कैसे रहे। बच्चों का पालन किस प्रकार करे तथा बच्चों को किस प्रकार की शिक्षा दे तो देश का बहुत कल्याण हो सकता है।

पहले ब्राह्मण की उत्पत्ति होती है। जिस समय बच्चा पैदा होता है तो शिर पहले आता है। यदि कहीं उल्टा हो जाये तो माता तथा बच्चा दोनों का जीवन संकट में पड़ जाता है। बच्चा बाहर आया। अब माता की गोद क्रीड़ा स्थल

www.thearyasamaj.org

बन गई। तब बच्चा कैसे पालना चाहिए? क्या सिखाना चाहिए? क्या शब्द उच्चारण कराने चाहियें। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ के दूसरे समुल्लास में यह बात दिया है कि माता बच्चों का पालन कैसे करे। वे लिखते हैं:-

"बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे जिससे सन्तान सभ्य हों और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावें। जब बोलने लगे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करे। जब वह कुछ-कुछ बोलने और समझने लगे तब सुन्दर वाणी और बड़े, छोटे, मान्य, पिता, माता, राजा, विद्वान् आदि से भाषण, उनसे वर्तमान और उनके पास बैठने आदि की भी शिक्षा करे जिससे कहीं उनका अयोग्य व्यवहार न होके सर्वत्र प्रतिष्ठा हुआ करे। जैसे सन्तान जितेन्द्रिय विद्या प्रिय और सत्संग में रुचि करें वैसा प्रयत्न करते रहें। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता ईर्षा द्वेष आदि न करे।"

जीवन की समस्याओं के समाधान के लिये ब्रह्मचर्य का पालन अत्यन्त आवश्यक है। एक बार मैंने एक मुसलमान से पूछा कि आपके यहाँ ब्रह्मचर्य पालन है या नहीं। उसने कहा "हमारे यहाँ जो शादी न करे वह आदमी नहीं।" मैंने कहा "कुरान में तो स्पष्ट आता है यहिसा सैयद थे, नेक थे ब्रह्मचारी थे।" मुसलमान चुप हो गया। जिस प्रकार गणित में जोड़ बाकी, गुणा और भागाकार होती है। इसी प्रकार हमारे वर्णाश्रम धर्म में भी इन चारों का समावेश है।

25 वर्ष तक प्रत्येक बच्चे को जोड़ना पड़ता है। 25 वर्ष के ब्रह्मचर्य काल में प्रत्येक बच्चे को अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। बच्चों को कुसंग से बचाना चाहिए। बहुत अधिक तड़कीले, भड़कीले वस्त्र धारण नहीं कराने चाहियें वैसे सफाई से रहना अच्छा है। माता की गोद में कोई गलत चीज न हो, अन्यथा बच्चे पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। उदाहरणत: एक ज्येठानी तथा दौरानी में झगड़ा रहता था। दोनों में एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या और द्वेष की भावना थी एक बार ज्येष्ठानी का पति बीमार हो गया। दौरानी के बच्चे हर समय चिल्लाते रहते थे। ज्येष्ठानी ने कहा अपने बच्चों को चुप कर लो। दौरानी ने कहा, बच्चे चुप नहीं होते ये तो चिल्लाते ही रहते हैं। इसका परिणाम बच्चे, समझते हैं कि चिल्लाना हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। माता ने अपने द्वेष की भावना से बच्चों को बिगाड़ दिया। बच्चे एक अच्छी तख्ती के सदृश्य होते हैं। अच्छी तख्ती पर गलत चीज नहीं लिखनी चाहिए। यह माता का कर्तव्य है। पहले बच्चे को दावत दी उसके पश्चात्

www.thearyasamaj.org

बच्चा माता की गोद में आता है। माता की गोद से अब क्रीड़ा स्थल में आता है। क्रीड़ा स्थल ऐसी जगह होनी चाहिए जहाँ बच्चे गाली न देते हों, भद्दी बातें न करते हों साथ ही उनमें चोरी करने और झूठ बोलने की आदत भी न हो। सिनेमा आदि न देखते हों। ऐसे बच्चों की संगत में न रहे जो सिनेमा के लिए पुस्तकें वेच देते हों। एक व्यक्ति सुना रहे थे कि जब से बच्चों को स्कूल में भेजना शुरू किया तब से वे अधिक झूठ बोलते रहे। शिक्षणालयों की दशा आज बड़ी शोचनीय हो गई है। आज लड़का यह समझता है कि यदि स्कूल में मास्टर को दबा दिया तो जीवन सफल। उधर यदि मास्टर शाम को स्कूल से बचकर आ गये तो अच्छे। यदि लड़के को उचित बात पर दण्ड दे दिया जाये तो सब विद्यार्थी विरुद्ध हो जाते हैं। आप पाप की हिमायत हो रही है, धर्म को दबाया जा रहा है। यदि लड़का बिगड़ गया तो क्या कभी सोचा लड़का कैसे ठीक होगा। इसके लिये व्यवहारिक शिक्षा देनी होगी। ईसाई व्यावहारिक शिक्षा बहुत अच्छी देते हैं। मैं हापुड़ में प्रातः सैर करने अपनी कोठी से एक पादरी के यहां तक जाया करता था। एक व्यक्ति ने एक दिन पूछा, ''आप यहाँ तक ही क्यों जाते हैं।'' मैंने कहा, ''वहाँ से यहाँ तक ही सुधार करना है इसलिए यहाँ तक जाता हूँ।'' ईसाई प्रति सप्ताह स्कूलों का निरीक्षण करते हैं। कमरे आदि की सफाई देखते हैं। विद्यार्थियों से ही पूछते हैं यहाँ धब्बा क्यों लगा है, यहाँ जाला क्यों हैं फिर उसे साफ कराते हैं। चाहे उनके धर्म में त्रुटि है परन्तु व्यवहार से आदमी फिर उसे साफ कराते हैं। चाहे उनके धर्म में त्रुटि है परन्तु व्यवहार से आदमी उनका बन जाता है। आज हमारा प्रचार उल्टे तरीके पर हो रहा है। जहाँ हम सोये हुए हैं वे जागे हुए हैं जिनकी हम मदद नहीं करते वे उनसे सहानुभूति रखते हैं। हमारे यहाँ अनाथालय हैं परन्तु उनके प्रबन्ध कर्ता स्वयं ही अनाथ बने हुए हैं। अनाथों के लिए सच्चा अनाथालय, रोगियों के लिए मुफ्त औषधालय, बालकों के लिए उत्तम पाठशालायें तथा असहायों की सहायता के लिए सेवा केन्द्र, ये चार आवश्यक हैं। ये हो तो जीवन की समस्याओं का समाधान हो जाये। आज इन्हीं के बल पर ईसाई लोग समस्त संसार को ईसाई बनाना चाहते हैं। एक जगह से आर्यसमाज के मंत्री के पास एक पत्र आया। पत्र इस प्रकार था।

मन्त्री जी!

अब समस्त संसार में ईशा का संदेश फैलने वाला है। संसार की कोई शक्ति इसे रोक न सकेगी। सनातनधर्मियों और जैनियों यदि तुम में शक्ति है तो अपनी पुस्तके लेकर शास्त्रार्थ के लिए आ जाओ। यह है ईसाइयों का पत्र है।

www.thearyasamaj.org

ऊपर मन्त्री जी लिखा है, अन्दर सनातन, धर्मियों और जैनियों को चुनौती दे रहे हैं। आज का वातावरण बहुत ही बिगड़ गया है। आज जहाँ ढीला पाजामा और कमीज पहने किसी व्यक्ति को देखो समझ लो.... है।

Co-education (सहशिक्षा) नहीं होनी चाहिए। रूस के सम्बन्ध में एक पुस्तक अध्ययन करते हुए पढ़ा था- "हमने लड़के और लड़कियों के स्कूल अलग-अलग कर दिये हैं। सहशिक्षा से लड़के और लड़कियाँ खराब हो गये।" इतना ही नहीं "वहाँ के विद्यार्थी प्रत्येक सिनेमा में नहीं जा सकते किसी विशेष सिनेमा में ही जायेंगे और वह भी अपने अध्यापकों के साथ।" जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए क्रीड़ा स्थल अच्छा होना चाहिए। यदि क्रीड़ा स्थल अच्छा नहीं तो अपने बच्चों को घर में ही खेलने की सुविधायें दें। जब मैं देहली में रहता था तो हमारे बच्चे ऊपर ही खेला करते थे। एक दिन एक बच्चा आकर कहने लगा कि एक लड़का गाली बक रहा था। मैंने पूछा क्या कह रहा था, तो कहने लगा कि मुझे बताने में शर्म आती है। यदि क्रीड़ा स्थल अच्छा हो तो बच्चों का स्वभाव उत्तम बन जाता है।

जीवन की समस्याओं का सच्चा समाधान वैदिक धर्म से ही हो सकता है महर्षि दयानन्द कहते हैं कि पढ़ाने वाला परोपकारी तथा सदाचारी होना चाहिये जब तक अध्यापक परोपकारी, सदाचारी तथा विद्यार्थियों के हित चिन्तक नहीं होंगे तब जीवन की समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता हमारे विद्यालय आदर्श विद्यालय होने चाहिये। मैं एक बार पूना के Seventh Day Advents निरीक्षण करने गया। प्रविष्ट द्वार पर वहाँ के विद्यार्थियों के रहन सहन के सम्बन्ध में एक लिस्ट लगी हुई थी। उस की कुछ बातें इस प्रकार थीं। यहाँ पढने वाले विद्यार्थी चाय, काफी, तथा पान का प्रयोग नहीं करते तथा चाय, काफी और पान चर्वण करने वाले विद्यार्थी यहाँ प्रविष्ट नहीं हो सकते। इन नियमों को देख कर मैं ने वहाँ के प्रबन्धकों से पूछा Eggs (अण्डे) खाते हैं, या नहीं, कहने लगे. Eggs तो हम खा लेते हैं।" मैंने कहा, "हम तो नहीं खाते यह भी माँस में सम्मिलित है। यह सुन कर उन्होंने ने कहा, "You are better than us." (आप हम से अच्छे हैं) मैंने फिर पूछा, "What about onion?" (आप प्याज खाते हैं या नहीं)" उन्होंने कहा, "हम तो खाते हैं।" मैंने कहा, "हम तो यह भी नहीं खाते।" उन्होंने उत्तर दिया, You are still better than us." (आप वास्तव में हम से बहुत अच्छे हैं) मैं ने फिर पूछा, कि मैं एक ऐसे विद्यार्थियों को प्रविष्ट कराना चाहता हूँ जो अण्डे और प्याज नहीं खाता, क्या आप उसके लिये प्रबन्ध कर

www.thearyasamaj.org

सकेंगे? उन्होंने साफ कहा, जहाँ 300-400 बच्चे पढ़ते हों वहाँ एक विद्यार्थी के लिये ऐसा प्रबन्ध होना सम्भव नहीं।

ईसाई अब मांस खाने का निषेध करते हैं। एक जगह एक ईसाई मांस खाने के विरूद्ध दलील देकर ब्राह्मण, वैश्य आदि को भी ईसाई बनाना चाहते हैं। पादरी साहब कहने लगे, हाँ इसका यह परिणाम हो सकता है। आज हमारा भोजन तो बिलकुल ही बिगड़ गया है। रात के दो बजे हैं। स्टेशनों पर चाय वाले Tea, Tea पुकार रहे हैं। यात्रा में नहाये नहीं, धोये नहीं, चाय पीने में लग जाते हैं। **आज स्कूल आदि में केवल पढ़ाया जाता है शिक्षा नहीं दी जाती।** पठन-पाठन और शिक्षा में भेद हैं। इसीलिये ऋषि दयानन्द ने लिखा है कि पठन-पाठन सफल नहीं हो सकता जब तक शिक्षा न हो। केला खाकर छिलका कहाँ फेकना चाहिए यह शिक्षा है। एक बार मैं रेल में यात्रा कर रहा था। कुछ व्यक्ति मूँगफली और नारंगी खाते जा रहे थे और उनके छिलके सीट के नीचे रखते जा रहे थे। अपने स्थान पर पहुँच कर जब वे लोग उतर कर जाने लगे तो मैंने कहा, ''आपका कुछ सामान रह गया है यह भी ले जायें।'' वे कहने लगे, ''हमारे पास तो थोड़ा सा ही सामान था वह हमने ले लिया।'' मैंने कहा, ''नहीं जो सामान रह गया है वह उठा लें।'' उन के पूछने पर कि सामान कहाँ है मैंने सीट की ओर इशारा कर दिया। उधर देख कर वे बहुत लज्जित हुए। मैंने कहा, ''खिड़की आपके पास थी आपने ये छिलके उधर नहीं फैंके, मैंने समझा शायद आप वैद्य हों, इसलिये आप को याद दिलाया था।'' उन्होंने उन छिलकों को उठाया और कहा भविष्य में हम इसका ध्यान रखेंगे, आपने आज बड़ी अच्छी शिक्षा दी है। उनके जाने के पश्चात् रेल में बैठे एक प्रोफेसर साहब ने अपने जीवन की एक घटना बताई जो इस प्रकार थी ''जब से ये बूट चले हैं इन्होंने हमें बहुत खराब किया। हम अपने बूटों को जहाँ चाहें वहाँ रख देते हैं। एक बार मैं जर्मनी में रेल से यात्रा कर रहा था। मैं अपने बूट सामने वाली सीट के बराबर लगाकर आराम करने लगा। सामने जो आदमी बैठे थे, उन्होंने यह देखकर अपनी जेब से एक कागज़ निकाला और कहने लगे Let me put a piece of paper between the seat and your feet. अर्थात् मुझे आपके जूतों के तथा सीट के बीच में एक कागज रख देने दीजिये इस से आप के आराम में भी फरक नहीं पड़ेगा और लोगों के कपड़े भी गन्दे नहीं होंगे। मैं बहुत लज्जित हुआ तथा क्षमा माँगी। थोड़ी देर पश्चात् उसी व्यक्ति ने मूंगफली खाकर छिलके अपनी जेब में रख लिये। मैंने पूछा, "Why have you put it in your pocket?" आपने ये छिलके अपनी जेब में

क्या रख लिये हैं? उसने कहा, "I will put it at proper place because I do not want to make my country unelcan," अर्थात् मैं इन्हें उचित स्थान पर डालूँगा, क्योंकि मैं अपने देश को गन्दा नहीं करना चाहता।'' बच्चों का पालन करते समय उन्हें ऐसी बातों का अभ्यास कराना चाहिये। माता-पिता को बच्चों में बुरी आदतें नहीं डालनी चाहिए। अभी एक जगह सगाई थी। एक पिता भी अपने बच्चे को साथ लेकर गया। रस्म समाप्त होने के पश्चात् पान बाँटने लगे। पिता पुत्र से कहने लगा, ''एक पान तुम भी ले लो।'' ऐसी शिक्षा बच्चों को कदापि नहीं देनी चाहिये। एक और भयंकर बीमारी फैली हुई है। लोग सड़कों पर तथा बाजारों में दान्तुन करते हुए निकलते हैं और सड़कों पर, बाजारों में थूकते चलते-हैं। एक बार मैं ने एक व्यक्ति से पूछा, ''आप ऐसा क्यों करते हैं? घर में एक स्थान पर बैठ कर दान्तुन क्यों नहीं करते, तो कहने लगे, ''चलते चलते दान्तुन करने से समय बचता है।'' मैंने कहा, ''यदि समय ही बचाना है परांठे पखाने में ले जाया करो।'' इस प्रकार पढ़ा-लिखा तभी सफल होगा जब शिक्षा होगी। जब क्रीड़ास्थल और शिक्षास्थल से निवृत्त हो गया तो अब क्या करे। हमारे यहाँ ब्रह्मचर्य आश्रम में विद्यार्थी सदाचार, ज्ञान, शिक्षा शारीरिक तथा आत्मिक बल आदि गुणों का संचय किया करते थे।

ब्रह्म के बहुत से अर्थ हैं परन्तु मुख्य हैं अन्न, वेद और ईश्वर। ब्रह्मचारी का अर्थ हुआ अन्न खाने वाला, मांस आदि खाने वाला नहीं, वेद पढ़ने वाला, तथा ईश्वर पर विश्वास रखने वाला। गुरुकुलों में ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य बनाये जाते थे। ब्राह्मण का काम था विद्वान् बनाना। क्षत्रिय का कार्य था देश तथा देश के व्यक्तियों की रक्षा करना। वैश्य का कार्य था चारों वर्णों का पालन करना। ये सब ब्रह्मचर्य आश्रम में तैयार होते थे। आजकल बिलकुल उल्टा है। जब एक बी०ए० उत्तीर्ण विद्यार्थी से पूछते हैं अब "What do you intend after that? तुम्हारा क्या करने का विचार है? वह कहता है, ''अभी सोचा नहीं।'' उनकी दशा ठीक उस आदमी की तरह है जो सड़क पर भागा जा रहा था। उस से पूछने पर कहा कहां जा रहे हो कहने लगा पता नहीं। बालक ब्रह्मचर्य आश्रम समाप्त कर गृहस्थ आश्रम में आता है गृहस्थ में आकर ब्राह्मण ने अविद्या दूर की, क्षत्रिय ने रक्षा की, वैश्य ने पालन किया और शूद्र ने सबकी सहायता की। कुछ लोग कहते हैं, शूद्र ने सहायता कैसे की। आप भागिये तो ब्राह्मण अर्थात् मुख, बाहु अर्थात् क्षत्रिय और अरु प्रदेश अर्थात् वैश्य ये तीनों भागते हैं। इसी प्रकार शूद्र

www.thearyasamaj.org

ने सबकी सहायता की। मनुष्य का निर्माण मनुष्य की भाँति होना चाहिये। समाज के लिये चार ही वर्णों की आवश्यकता है शिक्षक, रक्षक पोषक और सेवक। यदि आवश्यकता से अधिक है तो भी हानि और यदि कम हैं तो भी हानि। उदारणतः हाथ में पाँच अँगुलियाँ होती हैं यदि एक कट जाये तो शक्ति कम हो जाती है। यदि छः हो जायें तो भी ठीक नहीं। मेरे एक मिलने वाले के हाथों में छः अंगुलियाँ थीं। मैंने एक दिन उन से कहा आपकी शक्ति तो और बढ़ गई होगी। वे कहने लगे यह तो दुःखदाई है, कोट पहनते हैं समय अटक जाती है। जीवन की समस्याओं के समाधान के लिये तीन पैमाने हैं, माँ, बहन, बेटी। भाई बहन से वार्तालाप करता है, बाप बेटी से बातचीत करता है तथा पुत्र मां से। सब आनन्दपूर्वक रहते हैं क्योंकि गृहस्थ आनन्द धाम हैं बाजार में जाते हुए ये पैमाने हमें अपने सामने रखने चाहिये। बड़ी स्त्रियों को हम माता के समान समझें, बराबर वाली स्त्रियों को बहन के सदृश तथा छोटी कन्याओं को पुत्री के तुल्य समझें। वैदिक धर्म ने ये तीन कसौटियाँ दी हैं, परन्तु आज ये बिगड़ गई। सिनेमा ने सत्यानाश कर दिया। दो व्यक्ति सिनेमा का सामान ले जा रहे थे और आपस में फिल्मों की बातें करते जा रहे थे। मैंने पूछा, "आपने इन सिनेमाओं से लोगों का क्या भला किया" वे कहने लगे, " वैसे तो हम यह कार्य पेट भरने के लिये करते हैं परन्तु आप को सच्ची बात बताते हैं कि आज हमने लड़कों को भी घर में विश्वास के योग्य नहीं छोड़ा। जब ऐसी दशा है तो जीवन की समस्याओं का समाधान कैसे होगा।" ब्रह्मचर्य आश्रम ज्ञान बल एवं वीर्य की प्राप्ति के लिये है। इसी आश्रम में ब्रह्मचारी ज्ञान, वीर्य तथा बल का संचय कर अपने को गृहस्थ आश्रम के योग्य बनाता है। गृहस्थ आश्रम अन्तःकरण की पवित्रता के लिये है। गृहस्थ आश्रम से अन्तःकरण की पवित्रता कैसे होगी। गृहस्थी बनेगा तो सन्तान होगी। सन्तान का अर्थ है जो सम्यक् प्रकार से खानदान को लम्बा करे। जब माता की भावना अशुद्ध भी होगी। तो वह दूसरों के बच्चों को गाली नहीं देगी, क्योंकि वह समझती है कि मेरे भी बच्चे हैं। अन्तःकरण की दुर्भावना बच्चों ने रोक दी। जितने बच्चे होंगे माता अपने को बढ़ाती जायेगी। चार बच्चे होंगे तो माता चारों में व्यापक हो जायेगी। उसके हृदय में सबके लिये शुद्ध भावनाये होंगी। इस प्रकार गृहस्थ आश्रम में अन्तःकरण पवित्र हो जाता है। वानप्रस्थ आश्रम में जो कुछ पढ़ा है और अपने अनुभव से प्राप्त किया है उस से दूसरों को लाभ पहुँचाता है।

शेष पृष्ठ 24 पर...

www.thearyasamaj.org

इण्डिया को भारत बनाने का प्रयास

- उमाकान्त उपाध्याय

स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय संविधान के निर्माण में "इण्डिया दैट इज भारत" लिखा गया। यह भाषा के मुहावरे के कारण था, या राजनीतिक चतुराई, यह कहना कठिन है, किन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के 60-64 वर्षों के इतिहास में भारत का "इण्डियाकरण" बड़ी तीव्रता से, और लगता है, कि बड़ी सूझ-बूझ से होता जा रहा है। इण्डिया नाम यूरोप वालों ने दिया और यूरोप के सभी उपनिवेशवादी देशों का यह प्रयास रहा कि भारत को वास्तव में इण्डिया बना दें। भारतवर्ष में अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार का उत्तरदायित्व लार्ड मैकाले को दिया गया था। उसने बहुत स्पष्ट रूप से यह घोषणा की थी कि हमारी शिक्षा नीति का परिणाम यह होगा कि भारतवर्ष के लोग रंग रूप में तो भारतीय रहेंगे किन्तु उनका चिन्तन, मनन अभिरुचि, सब कुछ इंगलिश हो जायेगा। लार्ड मैकाले ने अपनी योजना को बड़ी सफलता से चालू किया और भारत के सीधे-सादे लोगों का "इण्डियाकरण" होने लगा। कम से कम भारतवर्ष का प्रबुद्ध वर्ग और कई राजनीति के नेता इस योजना के शिकार हो गये। भारतवर्ष भौगोलिक रूप से सिकुड़ता जा रहा है। एक समय था जब पख्तनिस्तान "शालापूर" व्याकरण के प्रसिद्धतम आचार्य पाणिनि की जन्मभूमि था और तक्षशिला भारतवर्ष का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय था। गौरीशंकर, मानसरोवर भारतवर्ष का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल था। किन्तु आज का भारत भूगोल की दृष्टि से बहुत सिकुड़ गया है। आज सिन्ध, मुल्तान, लाहौर, ढाका, चटगाँव, ये सब भारत से बाहर हो गये है।

इण्डियाकरण की एक झाँकी- 2011 ई० जनगणना के अनुसार भारतवर्ष की जनसंख्या 121 करोड़ है। इतनी बड़ी आबादी में केवल 2.5 लाख लोगों की प्रथम भाषा अंग्रेजी है और 9 करोड़ लोगों की द्वितीय भाषा अंग्रेजी है। यही थोड़े से लोग भारत के शासन पर हावी है। भारत में केवल चार उच्च न्यायलयों में अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी में भी कार्य करने की अनुमति है। ये उच्च न्यायालय उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश और राजस्थान के हैं। देश के अन्य 17 उच्च न्यायालयों में किसी भी भारतीय भाषा में कार्य करने की अनुमति नहीं है। भारत के उच्चतम न्यायालय में भी केवल अंग्रेजी में कार्य करने की अनुमति है। देश के 2-3 प्रतिशत अंग्रेजी जानने वालों को सर्वोच्च न्यायालय और

www.thearyasamaj.org

उच्च न्यायालय में कार्य की सुविधा होना जनतन्त्र का हनन और अंग्रेजीकरण का प्रखण्ड प्रमाण है। देश की 97-98 प्रतिशत जनता अपनी बात वकीलो के माध्यम से कहती है और न्यायाधीश जनता की भाषा में निर्णय नहीं देते है।

भारत बनाने का प्रयास- भारत को एक राष्ट्र में आबद्ध करने के लिए भारत के प्राचीन इतिहास के जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास बहुत आवश्यक है। भारत का इतिहास वेदों से आरम्भ करके रामायण, महाभारत काल से होता हुआ बौद्ध, जैन, शैव, वैष्णव, शाक्त, भक्तिमार्ग आदि अनेक धाराओं में होता हुआ कालिदास, भवभूति, माप, दण्डी आदि साहित्यकारी और गौतम, कपिल, कणाद, पतंजलि और व्यास आदि ऋषियों की चिन्तनधारा को लेता हुआ शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य, गौतमबुद्ध महावीर स्वामी आदि को अपने में समेटे हुए है। इसी प्रकार उत्तर में कैलाश मानसरोवर, गंगोत्री, बद्रीनाथ दक्षिण में रामेश्वर पश्चिम में सोमनाथ और पूर्व में गंगासागर सबको अपने में समेट कर भारतीय जनमानस को एक श्रेष्ठतम विरासत देता है। आज तक इतिहास में अधिक बल राजाओं के युद्धों और थोड़ा-बहुत शासन व्यवस्था पर लिखा जाता रहा है। यह समग्र इतिहास नहीं है। विद्यार्थियों को सांस्कृतिक और साहित्सिक आदि उपलब्यिों से परिचित कराना उपयोगी है। हम इंग्लैण्ड या विश्व का इतिहास थोड़ा पढ़ावे किन्तु कक्षा 5 से लेकर 10 तक अपने देश के इतिहास के विभिन्न पक्षों की उत्साह वर्द्धक जानकारी अवश्य पढ़ावे जिससे हमारे सम्पूर्ण राष्ट्र में भावनात्मक एकता और जातीय स्वाभिमान का भाव हमारे युवकों के हृदय में स्थान पा जाये। इससे राष्ट्र की भावनात्मक एकता तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान का बोध होगा।

यह सर्वथा सत्य है कि देश का प्रत्येक वर्ग इन सभी ऐतिहासिक धाराओं से सहमत न होगा। विभिन्न वर्गों की अभिरूचि भिन्न-भिन्न तथा संकुचित होगी। उदाहरण के लिए बौद्ध या जैन शैव या शाक्त विचार धाराओं की पसन्द नहीं करेंगे। एक सम्प्रदाय का अन्य सभी सम्प्रदायों से मतभेद होना स्वाभाविक ही है। सदाचार के प्रचारको को स्थापत्य के "रतिचित्रों" से घृणा, वितृष्णा होगी किन्तु बहुसम्प्रदाय वाले राष्ट्र के नागरिकों को अन्य सम्प्रदाय वालों के विचारों, मन्तव्यों को स्वतन्त्रता देना राष्ट्रीय कर्त्तव्य है। अतः हम किसी भी सम्प्रदाय को मानते हों, हमारा यह राष्ट्रीय दायित्व है कि हम दूसरे सम्प्रदायों के

www.thearyasamaj.org

विचारों का सम्मान करे।

एक सलाह अल्प संख्यक के लिए- हमारे देश में मुसलमान और ईसाई प्रमुख अल्पसंख्यक है। इनमें भी मुसलमानों की संख्या लगभग 20 प्रतिशत तक जाती है और दोनों मजहबों के पीछे बलवान, प्रभावशाली विदेशी राष्ट्र हैं। इससे भी बड़ा राष्ट्रीय रूप से खतरा यह है कि हमारी सभी सरकारें और केन्द्रीय सरकार भी इन्हें अपना ''वोट बैक'' बना रही है। इन मजहबों के चतुर नेताओं को निहित स्वार्थों को सिद्ध करने का अवसर मिल रहा है। किन्तु अल्पसंख्यक समुदाय को गंभीरता से विचार करना चाहिये कि सभी अल्पसंख्यक, मुसलमान, ईसाई, अनुसूचित जातियाँ, अनुसूचित जनजातियाँ, सभी अतिरिक्त सुविधओं की वैशाखी के सहारे अपनी बहुमुखी उन्नति नहीं कर सकेंगे।

यहाँ एक उदाहरण प्रासंगिक है। इण्डोनेशिया के राष्ट्रपिता सुकर्णो ने नेहरू जी को राष्ट्रीय अतिथि के रूप में आमंत्रित किया था। नेहरू जी के सम्मान में श्री सुकर्णो ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा। इस कार्यक्रम में रामलीला का बड़ा प्रभावशाली मंचन हुआ था। श्री नेहरू जी ने बड़ी प्रसन्नता एवं आश्चर्य से डा० सुकर्णो से पूछा, ''राष्ट्रपति जी, इण्डोनेशिया तो इस्लामी राष्ट्र है, किन्तु आपने रामलीला का मंचन कैसे कराया? यह तो हिन्दुओं का इतिहास है।'' राष्ट्रपति सुकर्णो ने नेहरूजी को उत्तर दिया, ''**प्रधानमन्त्री जी, हमारे बुजुर्गों ने न जाने किन परिस्थितियों में, किन विपदाओं में या कैसे मजहब बदल लिया, किन्तु हमने अपने पूर्वज और अपना इतिहास नहीं बदला है, हमें इससे लगाव है, हम इसे प्यार करते हैं। रामायण का हमारे देश में बहुत बड़ा सम्मान है।**' सभी अल्पसंख्यकों को डा० सुकर्णो की यह बात विचारने योग्य है। इसी प्रकार एक बार सीमान्त प्रदेश के सीमान्त गांधी के छोटे भाई श्री बादशाह खाँ का अभिनन्दन हुआ था। अपने अभिनन्दन के उत्तर में उन्होंने कहा था- ''**आप मुझे विदेशी क्यों मान रहे हैं? मैं तो आपके आचार्य पाणिनि के जन्मस्थान शालातूर** के पास का हूँ। मैं तो अपने को प्रथम आर्य मानता हूँ, फिर पठान हूँ और फिर मुसलमान हूँ। यह वास्तविक सच्चाई है कि मजहब तो विचारों के कारण, लोभ लालच के कारण, भय के कारण, छल प्रपंच किसी भी कारण से बदल जाता है। किन्तु भूगोल, इतिहास, बुजुर्ग और राष्ट्रीय उपलब्धियाँ नहीं बदलती। रूस के कम्युनिस्ट टाल्सटॉय का सम्मान करते है, चीन के कम्युनिस्ट कन्फ्यूसियस का सम्मान करते है तो व्यास, बाल्मिकी, कालिदास आदि

www.thearyasamaj.org

भारतवासियों के लिए भी सम्मान और आत्मीयता के पात्र हैं, चाहे सम्प्रदाय या मजहब कोई भी हो। हमारे देश के भी सभी अल्पसंख्यक अरब या जैरूसलम से नहीं आये हैं। एकाध प्रतिशत को छोड़कर सभी भारत की सन्तान हैं और यहाँ शत-प्रतिशत ही सबका इतिहास है। **भारत बनाने के लिए संस्कृत की महत्ता**- संस्कृत भाषा भारतवर्ष के लाखों वर्ष पुराने बहुमुखी इतिहास की संवाहक है। सारा यूरोप जर्मनी, इंग्लैण्ड, फ्रांस, यूनान सभी देशों के भाषा शास्त्री संस्कृत की महिमा पर मुग्ध है। प्रसिद्ध विद्वान् सर विलियम जॉन ने कहा था- ''संस्कृत भाषा की पद रचना अत्यधिक अद्भुत है। वह भाषा ग्रीक से भी पूर्ण लैटिन से अधिक समृद्धि तथा दोनों से अधिक परिष्कृत है।'' सारा संसार स्वीकार करता है कि हजारों वर्ष पूर्व का विज्ञान, गणित, भूगोल, खगोल, नक्षत्र विद्या आदि संस्कृत भाषा में निहित है। स्वतन्त्र भारत में बड़ी निर्दयता से संस्कृत की उपेक्षा हुई है। विदेशी राज्य के समय माध्यमिक कक्षाओं के लगभग 70 प्रतिशत विद्यार्थी संस्कृत पढ़ते थे और रामायण, गीता, महाभारत आदि उत्कृष्ट ऐतिहासिक धरोहर से उनका परिचय हो जाता था। संस्कृत हमारी उत्कृष्टता विरासत है। **पं० जवाहरलाल नेहरू लिखते है- ''यदि कोई मुझसे पूछे कि भारत के पास सबसे बड़ा खजाना और सर्वोत्तम धरोहर क्या है तो मैं बिना किसी हिचकिचाहट के कहूँगा कि संस्कृत भाषा और साहित्य तथा वह सब कुछ जो इसमें समाहित हैं। यह एक शानदार विरासत है और जब तक हमारे जीवन पर इसका प्रभाव कायम है तब तक भारत की यह श्रेष्ठता कायम रहेगी।'' महात्मा गाँधी ने भी कहा- ''संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसमें भारतीय संस्कृति का चिरंतन ज्ञान भरा है। बिना संस्कृत पढ़े कोई पूर्ण भारतीय नहीं बन सकता ।''** इण्डिया को भारत बनाने का एक सूत्री उपाय यह है कि 5-7% अंग्रेजी जानने वालों के वर्चस्व से भारत का राजतन्त्र मुक्त हो। ये 5-7% लोग देश की राजनीति केन्द्र और प्रान्तों में अधिकार किये बैठे है। इन्हीं के साथ आई० सी० एस० और पी० सी० एस० के अफसरान तथा अंग्रेजी मीडिया का निहित स्वार्थ समाया हुआ है। लार्ड मैकाले के इन मानसिक उत्तराधिकारियों से देश की शासन व्यवस्था को मुक्त कराकर हिन्दी और अन्य देशीय भाषाओं के जानने वाले मातृभूमि के वास्तविक उत्तराधिकारियों के वर्चस्व को प्रतिष्ठित करने से इण्डिया को भारत बनाने में सफलता मिलेगी।

www.thearyasamaj.org

यज्ञानुष्ठान में आपकी भूलें

- स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेदतीर्थ

विधिहीनमसृष्टात्रं मन्त्रहीनमदक्षिणम्।
श्रद्धाविरहितं यज्ञ तामसं परिचक्षते॥ - गीता

अर्थ- विधिहीन, यज्ञ कराने वाले ऋत्विजों और विशिष्ट विद्वानों का भोजन से सत्कार न करना, मन्त्रों के स्वरों और वर्णों का ठीक-ठीक उच्चारण न होना, विद्वानों और ऋत्विजों को दक्षिणा न देना या अनुष्ठान और शक्ति के अनुरूप दक्षिणा न देना तथा श्रद्धा का अभाव। इन पाँच कारणों से आपका यज्ञ तामसी हो जाता है। तामसी कर्म का फल कभी सुखदायक तथा शान्तिप्रद नहीं होता। अस्तु-

1. **आपकी पहली भूल**- विधि विरुद्ध का हवनकुण्ड और लोहे के पात्रों का प्रयोग। या करने या कराने में आपकी यह पहली भूल है। क्योंकि हवनकुण्ड और यज्ञ के अन्य सब पात्र सोना, चाँदी, ताँबा तथा काष्ठ इनमें योग्यता तथा स्वसामर्थ्यानुसार कुण्ड और पात्रों का प्रयोग ही विधि सम्मत है। अभाव में बालू रेत या पीली मिट्टी का 25 अंगुल लम्बा चौड़ा सम, चौरस चार अंगुल ऊँचा स्थण्डिल (चबुतरी) का प्रयोग करना शास्त्र सम्मत यज्ञीय स्थल यज्ञकुण्ड है।

प्रश्न- महर्षि के **सत्यार्थप्रकाश** के लेख के अनुसार तो हवनकुण्ड किसी भी धातु का बनवाया जा सकता है। महर्षि के विधान के अनुसार राजा से लेकर रंक तक अपने सामर्थ्य के अनुसार किसी भी धातु का हवनकुण्ड बना सकते हैं। क्योंकि किसी धातुपद से लोहे का भी ग्रहण होता है। इसलिए लोहे का हवनकुण्ड बनवाना और प्रयोग करना ठीक है?

उत्तर- ठीक है- किसी भी धातु का इस पद से अवश्य सोना, चाँदी, ताँबा, कांसा, पीतल, लोहा, शीशा तथा रांगा इन आठों धातुओं की हवनकुण्ड निर्माणार्थ प्राप्ति होती है। परन्तु-

"सीसकायसरीति पात्राण्ययज्ञियानि॥"

इस स्मृति वचन के अनुसार शीशा, लोहा तथा पीतल के बने पात्र यह योग्य नहीं हैं। क्योंकि इन धातुओं के पात्रों में रखा हुआ हविदृव्य विकार युक्त हो जाता है। हविर्द्रव्य में दही, आमला तथा बेर जैसे पदार्थ खट्टे होते हैं तथा हरड़ बहेड़ा जैसे पदार्थ कसैले होते हैं। ये सब शीशा, लोहा तथा पीतल के पात्रों में रखने से विकारयुक्त हो जाते हैं। इसलिए शीशा, लोहा तथा पीतल के बने पात्र अयज्ञीय कहकर इन्हें यज्ञ के बाहर रखा गया है। कांसा तथा रांगा अग्नि संयोग से विकृत हो जाते हैं। इसलिए

www.thearyasamaj.org

इनसे भी हवनकुण्ड का निर्माण नहीं हो सकता। शेष रहे सोना, चाँदी तथा ताँबा। इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश के लेख 'किसी धातु का' सीधा सरल और सत्य अर्थ है सोना, चाँदी तथा ताँबा। इनमें से किसी एक धातु का स्वसामर्थ्यानुसार हवनकुण्ड बनवाना। इस प्रकार किसी धातु का इस पद का अर्थ लोहे का बनवाना ऐसा नहीं है।

प्रश्न- पंच महायज्ञ विधि में महर्षि ने स्पष्ट लिखा है कि अग्निहोत्र के लिए सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा मिट्टी का कुण्ड बनवा लेना चाहिए। इसका आपके पास क्या समाधान है?

उत्तर- कोशकार लोहे के सोना, चाँदी, ताँबा, काँसा, पीतल, लोहा, राँगा तथा शीशा ये आठ भेद मानते हैं, तथा-

सुवर्ण रजतं ताम्रं रीति काँस्य तथा त्रपु।
सीसं कालायसं चैवमष्टौ लौहानि चक्षते॥

सोना, चाँदी, ताँबा, पीतल, कासा, राँगा, शीशा और लोहा ये आठ लोहे के भेद हैं (द्रष्टव्य- अमर कोश 2.9.99)।

सो पंच महायज्ञ विधि में सोना, चाँदी तथा ताँबा यह तीन प्रकार का लोहा। इस प्रकार वहाँ ग्रन्थ में विशेषण-विशेष्यभाव से सोना, चाँदी, ताँबा को लोहे के विशेषण के रूप में तथा लोहे को इन तीनों के विशेष्य के रूप में ग्रहण करना चाहिए। क्योंकि सोना-चाँदी-ताँबे की ही भाँति यदि लोहे का भी हवनकुण्ड निर्माणार्थ ग्रहण होता तो ताँबा और लोहा इन दोनों के बीच में किसी समुच्चयार्थक अव्यय पद का प्रयोग होना चाहिए तथा जैसे सोना, चाँदी, ताँबा और लोहा पर ऐसे किसी अव्यय पद का प्रयोग वहाँ नहीं हुआ है। जैसा कि मिट्टी पद के पूर्व समुच्चय वाचक अव्यय पद का प्रयोग हुआ है, इसलिए विशेषण-विशेष्य भाव की रीति से ग्रन्थ का व्याख्यान करना ही समुचित पक्ष है। इस रीति से पंचमहायज्ञ विधि के लेख की भाषा का यह अर्थ होगा- सोना, चाँदी, ताँबा यह तीन प्रकार का लोहा हवनकुण्ड निर्माणार्थ ग्रहण करना चाहिये, अभाव में भूमि में कुण्ड खोदना या बालू रेत अथवा पीली मिट्टी का स्थण्डिल (चबूतरी) बनाकर उस पर यज्ञ करना चाहिए। वास्तव में ग्रन्थ में यहाँ पर लोहा स्वतन्त्र द्रव्य के रूप में उल्लिखित नहीं हुआ है। जैसे स्थलों में सभी टीकाकार इसी विशेषण विशेष्य भाव की रीति से व्याख्यान करते हैं। आश्वलायन गृह्यसूत्र के मुण्डन संस्कार में गार्ग्य नारायण, कात्यापन श्रौतसूत्र के टीकाकार कर्काचार्य तथा विद्याधर गौड़ और आपस्तम्ब श्रौतसूत्र के टीकाकार भट्ट रुद्रदत्त ये सब अपनी-अपनी टीका में इसी विशेषण विशेष्य भाव की रीतिका प्रयोग करते हैं। तद्यथा भट्ट रूद्रदत्त आपस्तम्ब श्रौतसूत्र प्रश्न 8 कण्डिका 4 सूत्र 14 के व्याख्यान में "**लौहेन**

www.thearyasamaj.org

चक्षुरेणौदुम्बरेण निकेशान् वर्तवते।'' सूत्र भट्ट रूद्रदत्त की सूत्र वृत्ति-उदुम्बरम्-ताम्रम्। औदुम्बरेणेति लोह विशेषणम्। वृत्ति के अंश में भट्ट रूद्रदत्त ने उदुम्बरम् ताँबा को लोहे का विशेषण और लोहे को ताँबे का विशेष्य मानकर सूत्र का व्याख्यान किया है। ठीक इसी प्रकार पंच महायज्ञ विधि के लेख के सम्बन्ध में मेरा कहना है कि सोना, चाँदी तथा ताँबा ये तीनों लोहा पद के विशेषण हैं एवं लोहा पद इन तीनों का विशेष्य हैं। मेरा यह समाधान गार्ग्यनारायण, कर्काचार्य, विद्याधर गौड़ तथा भट्ट रूद्रदत्त के अनुसार है।

अति प्राचीन काल से ही शुभ कार्यों के अवसर पर लोहे का प्रयोग तो क्या उसका नाम लेना भी अशुभ माना जाता रहा है। यही कारण है कि यज्ञानुष्ठान के लिए तथा विवाह संस्कार में वर वधू के बैठने के लिए बनाई जाने वाली चौकियों में लोहे की कीला को नहीं लगाया जाता अपितु बाँस के कील बनाकर लगायें जाते हैं। सो पंच महायज्ञ विधि में भी लोहे के हवनकुण्ड का विधान नहीं है। बल्कि सोना चाँदी तथा तांबा यह तीन प्रकार का लोहा हवनकुण्ड बनाने के लिए प्रयोग में लेना चाहिए ऐसा विधान किया गया है। अस्तु।

2. आपकी दूसरी भूल- यज्ञानुष्ठान में आपकी दूसरी भूल होती है, छिलका रहित फटी हुई समिधाओं का प्रयोग। वास्तव में छिलका सहित बिना फटी गोल लकड़ी ही समिधाओं के रूप में प्रयोग के योग्य हैं। क्योंकि छिलके के रोग विनाशक तथा जलवायु की शुद्धिकारक गुणधर्मों को देखकर ही यज्ञ समिधाओं के लिए विशेष वृक्षों का विधान हुआ है। चन्दनादिक कुछ वृक्ष ऐसे भी हैं जिनके छिलके तथा लकड़ी दोनों ही विशेष उपकारक हैं।

3. आपकी तीसरी भूल- यज्ञपात्रों, विशेषकर के हवनकुण्ड को मांज-धोकर तथा लीप-पोत कर स्वच्छ न करना। लोहे का फूटा हुआ महीनों का मैला राख और कोयलों से भरा हुआ हवनकुण्ड आपके अनुष्ठान को तामसी बना देता है। सप्ताह तक या अधिक दिनों तक चलनेवाले यज्ञों में भूमि खोदकर बनाए हुए कुण्ड सप्ताह तक अग्नि के पुरीष (मल) के ढेर से भरे रहते हैं। आस-पास बिखरा हुआ हविर्द्रव्य फूलों की पंखुड़ियाँ आदि आपके यज्ञ की सात्त्विकता को समाप्त कर देते हैं। **अनेक दिवस सांध्य में कुण्ड की सफाई का प्रकार-** अनुष्ठान के अन्य साधनों के साथ ही ताँबे का एक चिमटा तथा ताँबे की ही एक परात या ताँबे की एक बाल्टी की व्यवस्था भी कर रखनी चाहिये। इसी प्रकार यज्ञशाला की उत्तर दिशा में कुछ दूरी पर एक उत्कर गड्डा खोद रखना चाहिए। जिसमें प्रतिदिन की यज्ञ की राख डाली जा सके। अब आपका यज्ञ प्रातःकाल

www.thearyasamaj.org

आरम्भ हुआ, निश्चित समय पर समाप्त हो गया। अब सायंकाल में यज्ञारम्भ से पूर्व उस ताम्बे के चिमटे से यज्ञाग्नि के सब अंगारे उस ताँबे की परात या बाल्टी में निकालकर दूसरे किसी पात्र में सावधानी से सारी राख कुण्ड से निकालकर यज्ञशाला के उत्तर में बने उत्कर गढ्डे में डालकर उस पर पानी छिड़क देना चाहिये। फिर कुण्ड को गाय के गोबर और पीली मिट्टी के योग से बने गारे से अच्छी तरह लीप-पोत कर फिर परात में रखे अग्नि को कुण्ड में पुनः प्रतिष्ठित कर उस पर छोटी-छोटी समिधाएँ रख देनी चाहिए। इसी प्रकार प्रतिदिन दोनों समय कुण्ड की सफाई और साज-सज्जा होनी चाहिए। कलश का पानी भी प्रतिदिन दोनों समय बदल देना चाहिए।

4. आपकी चौथी भूल- यजमानों, यजमान पत्नियों और ऋत्विजों के नाना रंगों में रंगे हुए भड़कीले उद्‌भासी वस्त्रों का होना भी बड़ी भूल है। क्योंकि यज्ञों में अपने हाथ से धुले हुए (धोबी के धुले नहीं) श्वेत वस्त्रों को धारण करने का ही विधान है। यजमान-यजमान पत्नी दोनों के लिए यज्ञानुष्ठान के समय वस्त्रों का संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण में इस प्रकार उल्लेख हुआ है कि, पत्नी-यजमान परिधानार्थ-क्षौमवासचतुष्टम्- अर्थात् यजमान पत्नी, यजमान, परिधानार्थ- पहिनने के लिए (क्षौम) क्षुमा अलसी के धागे से तैयार किये हुए चार वस्त्र। इन वस्त्रों के सम्बन्ध में हारीत स्मृति में महत्त्वपूर्ण विशेषण दिये गये है। तद्यथा- 1. सकृत धौतम्-बुनने के बाद एक बार हाथ से धुले हुए (धोबी के या मिल के धुले नहीं होने चाहिए), 2. नवम्- ये वस्त्र नये होने चाहिए। पहले पहने हुए पुराने नहीं होने चाहिए। 3. श्वेतम्- ये वस्त्र श्वेत रंग के होने चाहिए।
4. संदृशम्- वस्त्र के अग्रभाग को पल्ला (पंजाबी में बम्बल) कहते हैं। उस दशा (पल्ला) सहित होना चाहिए, अर्थात् किसी थान में से फाड़ा हुआ न हो। 5. यत् न धारितम्- जो पहने पहना न गया हो। यजमान पत्नी यजमान और ऋत्विजों को यज्ञानुष्ठान के समय ऐसे वस्त्र धारण करने चाहिए। शास्त्रकृत विधान तो यह है। मनमानी का कोई ठौर ठिकाना नहीं।

5. आपकी पाँचवीं भूल- यज्ञ की समाप्ति पर उपस्थित सभी लोगों से आहुति दिलवानी भी एक बहुत बड़ी भूल है। क्योंकि पूर्णाहुति केवल यजमान ही करेगा, यह इसलिए कि उसी का यज्ञ है, उसी के ऋत्विक् हैं। न उनका अग्नि है, न उनका हविर्द्रव्य है न वे प्रयत हैं न यज्ञोपवीत धारण किये हुए हैं। ऐसी दशा में उनका आहुति देने का अधिकार नहीं बनता। आपका यह कृत्य तो विवाह संस्कार की समाप्ति पर सभी बरातियों का एक-एक प्रदक्षिणा कराने जैसी ही विचित्र लीला

www.thearyasamaj.org

है, और है अर्थ लिप्सा। इसलिए इसे भी शीघ्र से शीघ्र बन्द कर देना ही सर्वोत्तम है।

6. आपकी छठी भूल- पूर्णाहुति में गोला, बादाम, फल आदि विशेष हविर्द्रव्य का प्रयोग भी उचित नहीं है। क्योंकि स्विष्टकृत् होम, प्रायश्चित्त होम तथा पूर्णाहुति इन तीनों होमों का हविर्द्रव्य वही होता है जो प्रधान होम का होता है। यदि प्रधान होम में गोला या बादाम जैसा कोई हविर्द्रव्य नहीं होता है तो पूर्णाहुति प्रधान-होम से भिन्न कोई स्वतन्त्र कर्म नहीं है।

7. आपकी सातवीं भूल- ऋत्विक् कर्म के अधिकारी केवल गृहस्थ विद्वान् ही हैं। कोई संन्यासी, वानप्रस्थ, विधुर विद्वान्, अंगहीन, श्वेतकुण्ठ आदि रोग के रोगों गुरुकुलों के ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणियाँ ऋत्विक् कर्म के अधिकारी नहीं हैं। इनसे ऋत्विक् कर्म करवाना बहुत बड़ी भूल है। अत: यज्ञों और संस्कारों के सम्पादनार्थ केवल गृहस्थ विद्वानों का ही ऋत्विक् कर्म के लिए वरण करना चाहिए। किसी आपत्काल में किसी संन्यासी महानुभाव आदि का ऋत्विक् कर्म कराना अपवाद रूप में है इसे नित्यविधि नहीं समझनी चाहिए।

8. आपकी आठवीं भूल है- ऋत्विजों तथा वेदपाठियों के आसन हवनकुण्ड से ऊँचे तख्त या चौकी आदि पर होना। क्योंकि ब्रह्मा ऋत्विजों तथा वेदपाठियों और यजमान के आसन हवनकुण्ड की ऊपरी मेखला से एक अंगुल नीचे हों पर ऊँचे नहीं होने चाहिए। ऐसा शास्त्र सम्मत है। अनुष्ठान के समय अग्नि ऋषि है पुरोहित है, अतिथि है, देवता है इसलिए यज्ञाग्नि से ऊँचे आसन, अज्ञान, अभिमान तथा अग्निदेव के इस सम्माननीय अतिथि के, तिरस्कार एवं अपमान के सूचक हैं।

9. आपकी नवम भूल- आपकी नवम भूल होती है, हवनकुण्ड के चारों ओर मैले-कुचैले फटे पुराने सूती आसनों का बिछाना। आसनों के निर्माण द्रव्य के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्दजी महाराज का संस्कार विधि में ऐसा लेख उपलब्ध होता है। 1. वर यज्ञकुण्ड के पश्चिम भाग में पीठासन अथवा तृणासन पर वधू को दक्षिण भाग में पूर्वाभिमुख बैठावे।

2. वधू और वर को यज्ञकुण्ड के समीप बैठाने के लिए दो कुशासन व यज्ञीय तृणासन अथवा यज्ञीय वृक्ष की छाल के जो कि प्रथम से ही सिद्ध कर रखे हों उन आसनों को रखवावे।

उदाहरण के लिए दो प्रमाण ही पर्याप्त हैं। सूती आसन अथवा सूती वस्त्र यज्ञ में एक बार प्रयोग में लाकर शुद्ध जल से धो, सुखाकर ही दूसरी बार प्रयोग में लाने चाहिए। आपका मलग्राही मैले-कुचैले फटे-पुराने, कूड़े पर फैंकने योग्य आसनों का प्रयोग तो आपके आलस्य दारिद्रय और अश्रद्धा का सूचक तामसी

www.thearyasamaj.org

कर्म है। ध्यान रखिये यज्ञानुष्ठान के लिए कुशा का आसन या काष्ठ की बनी चौकी पीठासन जिनमें लोहे की कील या पत्ती हों इसके ऊपर बैठने के लिए कुशा वा तृणासन बिछा हो, शास्त्रविहित सात्विक आसन है। अन्य किसी भी प्रकार का आसन अग्राह्य और विधि विरुद्ध समझना चाहिए।

10. आपकी दसवीं भूल है- लाऊड स्पीकर लगा सब इकट्ठे बैठ शुद्धाशुद्ध के विवेक रहित सन्ध्या और हवन के नाम से हल्ला मचाना। मन्त्रोच्चारण के विषय में महर्षि का संस्कार विधि में लेख है कि "सब संस्कारों के आदि में निम्नलिखित मन्त्रों का पाठ और अर्थ द्वारा एक विद्वान् व बुद्धिमान् पुरुष ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना स्थिरचित्त होकर परमात्मा में ध्यान लगा के करें और सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें और विचारें।" (संस्कार विधि के आरम्भ का लेख) "संब संस्कारों में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे। न शीघ्र न विलम्ब से उच्चारण करे, किन्तु मध्य भाग जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है करे। यजमान न पढ़ा हो तो इतने मन्त्र तो अवश्य पढ़ लेवें। यदि कोई कार्यकर्त्ता (यजमान) जड़ मन्दमति काला अक्षर भैंस बराबर जानता हो तो वह शूद्र है व हशूद्र मन्त्रोच्चारण करने में असमर्थ हो तो पुरोहित और ऋत्विज मन्त्रोचारण करें और कर्म उसी मूढ़ यजमान के हाथ से करावें (सामान्य प्रकरण की समाप्ति पर पाठ)।"

"विश्वानि देवव इत्यादि चारों वेदों के मन्त्रों से यजमान और पुरोहित आदि ईश्वरोपासना करें और जितने पुरुष वहाँ उपस्थित हों वे भी परमेश्वरोपासना में ध्यान लगावें (पुंसवन संस्कार का आरम्भ)।" "पुनः पृष्ठ 21-22 में लिखे प्रमाणे यथावत् चारों दिशाओं में आसन बिछा बैठ पृष्ठ 4 से 14 तक में ईश्वरोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरणम् करें। और जितने वहाँ पुरुष आयें हों वे भी एकाग्रचित होके ईश्वर के ध्यान में मग्न होवें (समावर्तन संस्कार का आरम्भ)।" "पश्चात् सुभूषित होकर शुभासन पर बैठ के पृष्ठ 28-29 लिखे प्रमाणे वामदेव्य गान करके उसी समय पृष्ठ 4 से 7 में लिखे प्रमाणे ईश्वरोपासना करनी, उस समय कार्यार्थ आये हुए सभी स्त्री-पुरुष ध्यानावस्थित होकर परमात्मा का ध्यान करें।" (विवाह संस्कार की समाप्ति पर)

इन उद्धरणों में पहली बात तो यह है कि **उच्च कोटि के आध्यात्मिक स्त्री-पुरुषों के समूह का नाम आर्यसमाज है।** महर्षि दयानन्दजी की आशा और कल्पना से विरुद्ध इस समय का आर्यसमाज पारस्परिक कलह, क्लेश और झगड़ों से व्याप्त है। इसका कारण है आर्यसमाज का आध्यात्मिकता से शून्य होना।

www.thearyasamaj.org

दूसरी बात यह है कि इन उद्धरणों में कोई एक भी शब्द ऐसा नहीं है जिससे ध्वनित होता है कि सब उपस्थित जन मिलकर मन्त्र बोलें, यह तो केवल आर्यसमाजियों की अपनी ही अज्ञान लीला है। एक बात और है। प्रत्येक वेद के मन्त्रों का उच्चारण करने का प्रकार अलग-अलग है।-

तदनुसार- **''यजुषा उपांशु क्रियते।''**

अर्थात् अनुष्ठान में यजुर्वेद के मन्त्रों का उपांशु उच्चारण होता है। प्राचीन मनीषियों ने ध्वनि प्रदूषण का सर्वदा ध्यान रखा है इसलिए उन्होंने सन्ध्योपासना तथा अग्निहोत्र के मन्त्रों में यजुर्वेद को ही प्रमुख स्थान इसलिए दिया कि ये दोनों नित्यकर्म सभी गृहस्थ दोनों समय करेंगे यदि लाऊडस्पीकर लगाकर मन्त्रोच्चारण हुआ तो उसने समय के लिए प्रत्येक ग्राम और नगर कोलाहल पूर्ण अति अशान्त रूप में बदल जायेंगे। यजु: क्योंकि उपांशु उच्चरित होंगे इसलिए इनके विनियोग से ध्वनि प्रदूषण का कोई भय नहीं होगा। पर आर्यसमाज की तो सचमुच तीन लोक से मथुरा न्यारी वाली स्थिति है। है कोई साहसी पुरुष जो इस लाउडस्पीकर से दोनों समय होने वाले हल्ले को बन्द करा दे। वास्तव में लाउडस्पीकर का प्रयोग तो भजन, प्रवचन तथा व्याख्यान के अवसर पर ही मात्र होना चाहिए, अन्य अवसरो पर नहीं।

11. आपकी ग्यारहवीं भूल- यज्ञ समाप्ति पर यज्ञ संस्था जप रूप में लिखा गया महर्षि दयानन्द का विनियुक्त महावामदेव्यगान न बोलकर अनेक त्रुटिपूर्ण 'यज्ञरूप प्रभो हमारे' इस पद्य का बोलना है। महर्षि लिखते हैं कि मंगल कार्य, अर्थात् गर्भाधानादि संन्यास संस्कार पर्यन्त पूर्वोक्त और निम्नलिखित सामवेदोक्त महावामदेव्य गान अवश्य करें।

महाराज ने मन्त्र दिये हैं-

1. ओ३म् भूर्भुवः स्वः। कया नश्चित्र.। 2. ओ३म् भूर्भुवः स्वः कस्त्वा सत्यो.। 3. ओ३म् भूर्भुवः स्वः अभिषुणः सखीनाम्। आगे संस्कारविधि में प्रत्येक संस्कार के अन्त में इस संस्था जप का-वामदेव्य गान का विधान किया गया है। पर धन्य है आर्यसमाज के विद्वान् पुरोहित और आर्यसमाजी जन कि कोई भूलकर भी इनका नाम नहीं लेता। खेद महाखेद?

प्रश्न- जब हमें सामवेद के स्वरों का ज्ञान नहीं है। तो फिर यह महावामदेव्यगान कैसे करें। अतः स्वरज्ञानाभाव के कारण महावामदेव्यगान का पाठ नहीं करते तो इसमें हमारा क्या दोष है?

उत्तर- भाई आर्यजी! स्वर तो आप ऋगु, यजु तथा अथर्ववेद के मन्त्रों का भी नहीं जानते, परन्तु प्रतिदिन इन वेदों के मन्त्रों का पाठ एक श्रुति से किया जाता है तो फिर सामवेद के स्वरों के सम्बनध में आपका स्वरज्ञानाभाव कारण बताना कोई अर्थ नहीं रखता। बन्धुवर चाह को

www.thearyasamaj.org

राह है आप गोभिल गृह्यसूत्र को देखें, वहाँ लिखा है कि प्रत्येक शुभ कर्म के अन्त में महावामदेव्यगान गाना चाहिए यदि गाने में आसमर्थ हो तो-

अथवा गानाशक्तैत्रिधा 'कया न'
इतयादि पठेत । इति ।
अथ च गानाशक्तौ ऋच:
त्रिश: पठनीया।

– गोभिल गृह्यसूत्र पृ. 204

उद्धृत टीकास्थ दोनों का अर्थ समान है, अर्थात् यदि कोई व्यक्ति वामदेव गान के गाने में असमर्थ हो तो गानास्थ तीनों ऋचाओं में से प्रत्येक ऋचा का पाठ एकश्रुति की रीति से तीन-तीन बार करना चाहिए। तीनों मन्त्रों का एकश्रुति पाठ की रीति से तीन-तीन बार बोलने में किसी को भी कठिनाई नहीं होगी। पूर्णाहुति के पश्चात् महावामदेव्य गान और आशीर्वाद के पश्चात् सब सज्जन यज्ञशाला से बाहर सत्संग भवन में पहुँच जावें। अब यहाँ बैठकर इच्छानुसार सिद्धान्तानुकूल गाना (भजन) गाने में कोई हानि नहीं। यज्ञशाला केवल, यज्ञानुष्ठान अथवा सन्ध्योपासना के लिए है। ढोलक बाजा गान और व्याख्यान के लिए सत्संग भवन है यज्ञ शाला नहीं।

12. आपकी बारहवीं भूल- यज्ञ समाप्ति पर पूर्णाहुति के पश्चात् घृतपात्र के शेष घृत को यज्ञाग्नि में डाल उस पात्र में थोड़ा पानी डालकर सब को देना तथा उपस्थित जनों का उस पात्र में से घृत मिश्रित जल ले-लेकर उस जल मिश्रित घृत को मुँह पर, हाथ-पावों पर मलना। यह आपकी बारहवी भूल है। वास्तव में संस्कारविधि के अनुसार तो पात्र के शेष घृत को यजमान और यजमान पत्नी को खाना चाहिये। ऐसा विधान है। यथा **'ओं सर्वं वै पूर्ण स्वाहा'** इस मन्त्र से एक आहुति देवें ऐसे ही दूसरी और तीसरी आहुति देके जिसको दक्षिणा देनी हो देवें वा जिसको जिमाना हो जिमा, दक्षिणा देके सबको विदाकर स्त्री-पुरुष (यजमान पत्नी तथा यजमान) हुतशेष घृत, भात वा मोहन भोग को प्रथम जीम के पश्चात् रुचिपूर्वक उत्तमान्न का भोजन करें। (संस्कारविधि के सामान्य प्रकरण की सम्पत्ति। ग्रन्थ में महर्षि ने हुतशेष घृतको स्पष्ट शब्दों में खाने का विधान किया है। क्योंकि यह अमृत हे, यह पात्र में बचा हुआ हुतशेष **'यज्ञशिष्टाशिनोऽमृतभुज** खेद है अश्रद्धा, आसुरी भाव प्रकाशित करते हैं धन्य है आप की बुद्धि की। आशा है आप इस भूल को शनैः-सुधारने का प्रयत्न करेंगे।

'प्रयत्नशीला: सुखिनो भविन्त'

प्रभु आर्यो को संध्या यज्ञ तथा अग्निहोत्रादि शुभ-कर्मो के विधिपूर्वक अनुष्ठान के लिए श्रद्धा और शक्ति प्रदान करें। ●

www.thearyasamaj.org

परिवार का आधार पत्नि पर ही होता है

-डा० अशोक आर्य, गाजियाबाद

बेटी अपने पिता के घर में पिता कुल का सम्मान होती है। इस सम्मान की रक्षा वह निरन्तर करने का यत्न भी करती है किन्तु एक विशेष आयु के पश्चात् कोई भी पिता अथवा माता नहीं चाहते कि उसकी बेटी उसके घर में रहे। यही मर्यादा विश्व भर मे प्रचलित है। बेटी को वधू बना कर पिता स्वयं अपने हाथों से सजा - संवार कर उसे उसके पति के आधीन कर देता है। अब ससुराल ही उसका अपना घर होता है तथा इस में रहते हुए वह अपना आगामी जीवन इस अपने नए परिवार की सेवा - सुश्रुषा तथा मंगल की कामना करते हुए इस परिवार को ही अपना जीवन मानते हुए इस के सुख को अपना सुख तथा इसके दु:ख को अपना दु:ख् मानती है। इसके यश तथा इसके अपयश को अपना अपयश मानते हुए अपने इस नए परिवार का नाम उज्जवल करने क यत्न करती है। वह एक प्रतिज्ञा में बन्ध कर एक वचन में बंधे हुए आजीवन अपने इस नए परिवार की उन्नति के यत्न करती है। इसलिए ही नारी को इस नए परिवार की ग्रहस्वामिनी कहा गया है। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में नारी की इस अवस्था का ही वर्णन किया गया है। मन्त्र कहता है कि :-

पूषा त्वेतो हस्तग्रह्याऽश्विना त्वा
प्रवहतां रथेन।
ग्रहान गच्छ ग्रहपत्नि यथातो वशिनी त्वं
विदथमा वदासि।।

-- ऋग्वेद 10.85.26

हे वधू! तुम्हें पूषा देव हाथ से पकड़ कर तेरे पिता के घर से ले जावे। अश्विनी कुमार तुझे रथ के द्वारा तेरे पति के घर ले जावे। तुम पति के घर जा कर घर की स्वामिनि बनो। (वहां) तुम संयम पूर्ण रहते हुए यज्ञ आदि कर्म करना तथा ज्ञान चर्चा के स्थानों पर भाषण देना।इ स मन्त्र में नववधू के पिता के निवास से पति के निवास पर जाने अर्थात् विवाह का वर्णन किया गया है। मन्त्र कहता है कि पूषा देव अर्थात एक प्रतीमा के आधीन पिता अपनी कन्या को वर के हाथ में देता है। वर उस कन्या को उसी पूषआ देव अर्थात प्रतिज्ञा के आधीन हो हाथ पकड़ कर उस वधु उसके पिता के घर से ले जाता है। इस का भाव यह है कि वधु, उसके माता-पिता तथा उसका वर, यह सब एक वचन में बंधे होते हैं। इस वचन के अधीन रहते हुए ही पिता अपनी कन्या का हाथ जिस वर के हाथ में देता है, वह वर उस कन्या का हाथ पकड़ कर उसे

www.thearyasamaj.org

उसके पिता के घर से ले जावे हाथ पकड़ कर उस वधु उसके पिता के घर से ले जाता है। इस का भाव यह है कि वधु, उसके माता-पिता तथा उसका वर, यह सब एक वचन में बंधे होते हैं। इस वचन के अधीन रहते हुए ही पिता अपनी कन्या का हाथ जिस वर के हाथ में देता है, वह वर उस कन्या का हाथ पकड़ कर उसे उसके पिता के घर से ले जावे तथा अत्यन्त आदर, सत्कार, सम्मान व सुरक्षा के साथ उसे अपने घर ले जाने के लिये अश्विनी कुमारों की सहायता ले। अश्विनी कुमारों की विशेषता यह होती है कि अश्विनी देव कभी अकेला नहीं रहता। अश्विनी का अर्थ ही होता है जोड़ने वाला। जिस प्रकार गाड़ी का एक डिब्बा सदा दूसरे के साथ जुड़ कर ही इंजन के साथ लगता है। तब ही वह गाड़ी बनती है। इन्जन के साथ जुड़े बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं रहता। एक दूसरे के साथ जुड़ने का नाम ही अश्विनी है। यदि यह संगठन के काम न कर सके, जोड़ने का काम न कर सके तो यह अश्विनी हो ही नहीं सकता। वैदिक शिक्षाएं प्रतीक रूप में ही हैं। हम जो कई क्रियाएं करते हैं, वह किसी न किसी प्रतीक का स्मरण दिलाते हुए कुछ विशेष शिक्षा देती है। अश्विनी कुमार वधू को उसके पिता के हाथ से पकड़ कर एक सुन्दर रथ में बिठावें। इस का भाव यह है कि पति कुल में वधू को ले जाते हुए पति उसे बड़े आदर के साथ ले कर जावे। इस आदर के प्रतीक स्वरूप रथ के घोड़े उसे बड़े आदर के साथ इस सजे स्यंवरे रथ में उसे उसके पति सहित ले कर जाते हैं। इस मन्त्र में पिता के निवास से पति के निवास तक वधू को ले जाने के लिये दो देवों का प्रयोग प्रतीक रूप में हुआ है। इस सब का भाव यह है कि वधू को पिता के घर से पति के घर ले जाने का काम बड़ी जिम्मेवारी का, बड़े उत्तरदायित्व का होता है। इस अवसर पर अकेली वधू ही साथ नहीं होती भेंट में मिला धन, वस्त्र व आभूषण भी होते हैं। इन सब को देव कृपा से बड़े सावधानी से (मार्ग के चोर, डाकू, लुटेरों तथा अवारा प्रकार के लोगों से बचाते हुए) उत्तमता से सम्पन्न करना होता है। इस कारण ही दो देव (पूषा, जो आज्ञापालन का कम करता है तथा अश्विन, जो जोड़ने का काम करता हैं) के सहयोग से सम्पन्न करने के लिए मन्त्र आदेश दे रहा है। मन्त्र आगे कहता है कि वधू पति के निवास पर पहुंच कर उस परिवार की ग्रह पत्नि कहलाती है, अब उसे ग्रह स्वामिनि के रूप में जाना जाता है। अब उस का कार्य पिता के घर वाला नहीं रह जाता। अब उसका कार्य बहुत बध जाता हैं आज से उसने पति के पूरे परिवार की जिम्मेवारी अपने कन्धों पर लेती है। इसके लिए व कुछ तो पहले से ही

www.thearyasamaj.org

तैयार हो कर पिता के यहां से आती है तथा कुछ वह इस परिवार की अवस्था, इस परिवार के रहन सहन, इस परिवार की सोच को देख कर स्वयं सुलभ विचार से निर्णय लेकर तथा वहां के वातावरण आदि को देख समझ कर इस उत्तरदायित्व को उठाने के लिए तैयार होती है। इस अवसर पर नव वधू के लिए मन्त्र ने दो कर्तव्य बताए हैं :-

1. संयम :-

मन्त्र इस अवसर पर नव वधू के जो दो कर्तव्यों पर उपदेश देता हैं, उनमें से प्रथम है संयम। मन्त्र कहता है कि परिवार के प्रेम, स्नेह पाने के लिए तथा परिवार में शान्ति बनाए रखने के लिए उसे संयम को, धैर्य को अपने हाथ से नहीं जाने देना चाहिये। सब काम संयम से करना चाहिये। संयम नारी का सब से बड़ा सहयोगी तथा सबसे बड़े आभूषण होता है। विशेष रूप से नव विवाहिता के लिए संयम अत्यन्त आवश्यक है। यदि वह संयम रहित हो परिवार में वातावरण को दुषित बनाएगी तो वह स्वयं के लिए अनादर, अपमान का कारण बनोगी। उसे संयमित जीवन अपनाते हुए विषयों के प्रति अत्यधिक आसक्त नहीं होना चाहिये। अधिक आसक्ति से शरीर भी दुर्बल होता है। जहां तक स्त्री रोग का प्रश्न है, यह तो प्राय: आते ही असंयम के कारण हैं। अत: नारी का सदा संयम में रहना ही उपयोगी होता है।

2. शास्त्र चर्चा :-

नारी का दूसरा आवश्यक आभूषण अथवा दूसरा कर्तव्य इस मन्त्र में बताया हैं शास्त्र चर्चा। शास्त्र चर्चा वह तब ही कर सकती है, जब वह शिक्षित होगी। अत: नारी का सुशिक्षित होना भी आवश्यक है। सुशिक्षित नारी ही परिवार की उन्नति में अग्रणी बन सकती हैं। नारी को धर्म की प्रतिभूति माना गया है। इसलिए उसे सदा परिवार में धर्म की विधि करने का यत्न करना चाहिये। परिवार में धर्म परायण नारी का सब स्वागत करते हैं, सब सम्मान करते हैं।

पृष्ठ 24 का शेष....

यहाँ गुणा है 3x31 वानप्रस्थी आज के अध्यापकों की तरह नहीं होते जिनका ध्यान वेतन की ओर रहता है, पढ़ाने की ओर नहीं। संन्यास आश्रम में मोह त्याग है। सन्यासी के लिये 'वसुधैव गुटुम्बकं' सारा संसार ही अपना घर बन जाता है। यह क्रम जीवन की समस्याओं को हल करने का समाधान है। जीवन की समस्याओं को हल करने के लिये हमें बुनियादी बातों पर ध्यान देना होगा नहीं तो बिगाड़ होगा और होता ही रहेगा।

ओ३म् शुभ।

www.thearyasamaj.org

कुमारों को संदेश

- शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धा सत्येॅंप्रजापतिः॥

(यजु०- 19.77)

अर्थ- प्रजा के रक्षक परमात्मा ने अपने सत्य ज्ञान से सत्य और अनृत को जुदा-जुदा करके यह उपदेश दिया है कि सब मनुष्यों को अनृत अर्थात् अधर्म में अश्रद्धा करनी चाहिए और सत्य अर्थात् धर्म में ही श्रद्धा करनी चाहिए। **भारत के भविष्य-निर्माता! प्रिय कुमारो!**

मैंने आपको केवल 'कुमार' शब्द से ही संबोधित किया है इसलिए सच्चे अर्थों में कुमार बनने के लिए भी कुछ कठिन कार्य करने की आवश्यकता होगी। वैसे तो आप में कुमारावस्था को पार किए हुए व्यक्ति भी विराजमान है परन्तु मेरा यह लेख सबके लिए शिक्षाप्रद होगा चाहे वे किसी अवस्था के हों। **'कु' अर्थात् कुत्सित कामों से जो घृणा करे वह 'कुमार' कहलाने का अधिकारी है।** नीच, अधम व निंदित कर्मों को 'कुत्सित' कर्म कहते हैं। इनसे जब तक बचा हुआ न हो वह सत्यार्थ में कुमार नहीं है।

इस अवस्था का नाम 'कुमारावस्था' इसलिए रखा है कि इस समय में जो दुर्गुण या सद्गुण घर कर जायगा वह सारी आयु तक कायम रहेगा। दूसरे 'कुमार' का अर्थ श्री स्वामी जी महाराज 'उणादिकोष' में यह करते है कि "कामते भोगानिति कुमारः" अर्थात् जो भोगों की इच्छा करने लगता है वह "कुमार" है। जो बन-ठन कर रहना चाहता है, साफ कपड़े पहनकर, बालों को अच्छी प्रकार बहाकर, सिर में तेल लगाकर और अपने को कुछ आकर्षक बनाकर आता-जाता है, यह भी इसी अवस्था की विशेषता है। अतः इस आयु की रेल से यात्रा करने के लिए दो Lines हैं- एक कुत्सित कामों से बचने की और दूसरी अपनी कामनाओं की पूर्ति की। अर्थात् अपनी कामनाओं पर ऐसी रोक रखें कि कुत्सित कामों पर झुक न जायें। अगर झुक गये तो जीवन का Derailment हो जायगा और बहुत प्रकार की हानियाँ भोगनी पड़ेंगी।

इसको विस्तार से यूँ समझिए कि- प्रायः इस आयु में आने पर अधिकतर प्रत्येक कुमार एक विशेष प्रकार के कपड़े पहनना चाहता है। ऐसे जो दूर से भले प्रतीत हों, आकर्षक लगते हो, जिनमें कहीं कोई शिकन न हो, Iron की हों। कमीज का कालर खड़ा हो,

पड़ा न हो। बाल बढ़िया अंग्रेजी ढंग के हों। कई बार दिन में कंघा जेब में रख कर सँवारता हो। बालों को बाल बच्चों की भाँति पालता हो। आजकल के फैशन के अनुसार पतलून भी बढ़िया कपड़े की हो। वह धोती वालों को घृणा से देखते हैं। जूता कई रुपये का पड़ता हो, तो भी पहनना जरूर। उस पर च्वसपी ऐसी हो कि चेहरा दिखाई देता हो। यह कुमारों के उपभोगों की (स्पेज) सूची है। अब विचार यह करना है कि क्या कुमारावस्था का यही अन्तिम उद्देश्य है या किसी अन्य उच्च उद्देश्य तक पहुँचने का साधन है। इस बात का उत्तर खोजने के लिए हमें संसार में प्रचलित विचार-धाराओं का अध्ययन करना पड़ेगा। आज सारा संसार दो प्रमुख विचारधाराओं में बँटा हुआ है- एक भौतिकवादी, जो संसार को प्राप्त करना ही अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य हैं, जो भी काम वे करते हैं उसमें उनका यही उद्देश्य छिपा रहता है। वे चाहते हैं कि अच्छे कपड़े हों, अच्छे मकान हों, बढ़िया कोठियाँ हों, उनमें पंखे लगे हों, उनमें कोच बिछे हों, कमरे में रेडियों बज रहा हो। घूमने के लिए बढ़िया कार हो। खाने के लिए बढ़िया-बढ़िया भोजन हों। उनके जीवन का मूलमन्त्र दुनियावी चीज को प्राप्त करना है और कुछ नहीं। चाहे वे ये चीजें कैसे ही प्राप्त करें, बेईमानी से, झूठ बोलकर, दूसरे का हक मारकर चाहे जैसे भी हो उन्हें अपनी भोगों की अग्नि को शान्त करना है-

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्।
ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्॥

दूसरी विचारधारा इससे बिल्कुल विरोधी व उल्टी है। वह विचारधारा ईश्वरवादियों की है। उनका दृष्टिकोण पारलौकिक है। उनके लिए इस लोक से अधिक महत्त्व भविष्य के जीवन का है, मृत्यु के बाद की दुनिया में वे झाँक रहे हैं। और उस जीवन की आधार-शिला वे इसी जीवन में रख देना चाहते हैं। उनकी जीवन का यही एक उद्देश्य है। उनकी यह चाह नहीं है कि वे अच्छी कोठियों में रहें। वे यह नहीं चाहते है कि उन्हें घूमने के लिए कारें मिलें या रेडियो के बगैर उनकी रोटी नहीं पचती। उन्हें अपने कपड़ों की परवाह नहीं है। उन्हें अपने भोजन की भी परवाह नहीं है। ये सब बातें उनके लिए महत्त्वहीन हैं। वे उनके लिए नाकारा हैं, फिजूल हैं। वे भूखे और नंगे रहकर, जंगल में अपना घर बनाकर, वर्षा में भीगकर, दुनिया भर की आपदाएँ उठाकर अपने उद्देश्य व अपनी मंजिल पर पहुँचने के लिए कटिबद्ध हैं।

ये दो प्रमुख विचारधाराएँ हैं जो आज संसार के सामने हैं। ये दो रास्ते हैं जो आज हमारे सामने हैं। इन्हीं में आज कशमकश चल

www.thearyasamaj.org

रही है। बड़े-बड़े विचारक व दार्शनिक इसी बात की सोच में हैं कि कौन विचारधारा सही है। इन दोनों में कौन रास्ता ठीक है। जिसे चुना जाय या जिसको चुनने के लिए लोगों को कहा जाए। आज की दुनिया भौतिकवादी होती चली जा रही है। वे सांसारिक चीजों को लोग दकियानूसीपन कहते हैं। ऐसे लोग जो ईश्वर में विश्वास करते हैं साम्प्रदायिक संकुचित दृष्टिवाले कहे जाते हैं।

हमारा छात्रवर्ग या कुमारावस्था के बच्चे भी इस प्रभाव से अछूते नहीं है। बल्कि उनमें यह भावना कूट-कूट कर भरी हुई सी प्रतीत होती है। उनके बारे में यह विश्वास हवा में उड़ता हुआ विश्वास नहीं है बल्कि उसके सबल प्रमाण हैं। आज के कुमार जो शिक्षा पाने की अवस्था में हैं उनके काम इस बात के सबल प्रमाण हैं। अधिकतर छात्र जो स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, असभ्य हैं, स्वार्थी हैं, अनुशासनहीन हैं, असत्यवादी, उद्दण्ड और अभद्र हैं। वे प्रत्येक आज्ञा की अवज्ञा करते हैं और इसी में अपना बड़प्पन समझते हैं। जब कभी बस आती हैं तो जरा नजारा देखिये कि क्या होता है। बनी बनाई लाइन समाप्त हो जाती है। जो लोग लाइन में उनसे पहिले घंटो पहिले के खड़े रहते हैं खड़े-के-खड़े रह जाते हैं और उनसे पीछे आने वाले ये छात्र बसों में धक्का-मुक्की करके चढ़ जाते है। इस प्रयास में यह भूल जाते हैं कि उनके मुकाबले में शक्तिहीन, वृद्ध व बच्चे और स्त्रियाँ हैं। वहाँ उनके शील व सभ्यता का दिवाला निकलता पाता है। बसों में चढ़ जाने पर भी वे शान्ति से नहीं बैठते, अनर्गल बातें करते हैं, नियमानुसार पास की जाँच-पड़ताल कराने में भी ये आनाकानी करते हैं। बसों में जहाँ चढ़ना-उतरना नहीं चाहिए वहाँ वे चढ़ते-उतरते हैं और मना करने पर भी नहीं मानते। विद्यालयों व विश्वविद्यालयों में जा कर वे पढ़ाई में मन नहीं लगाते। पढ़ाई के अतिरिक्त वे सभी काम करते हैं चाहे वे उनके करने के हों या न हों। वे इतने दुस्साहसिक कार्य करते हैं कि वे स्कूलों से भाग जाते हैं और माँ-बापों धोखा देने के लिए अपने घरों पर ठीक छुट्टी के समय पहुँच जाते हैं।

परीक्षाओं में वे नकल करने से नहीं चूकते और इसी प्रकार परीक्षाओं में उत्तीर्ण होना वे अपना हक समझते हैं। ऐसे कामों से रोके जाने पर वे अध्यापकों व प्रबन्धकों को धमकाते हैं, उनकी बेइज्जती करते हैं और उनके ऊपर घातक हमले भी कर बैठते हैं। जब कभी रेलों में यात्रा करते हैं तो बिना टिकिट यात्रा करते हैं वा निर्धारित श्रेणी से ऊँची श्रेणियों में बैठते हैं और

रेल के सामान को हानि भी पहुँचाने से नहीं चूकते। पकड़े जाने पर प्रबल विरोध करते हैं, छोड़ने का दुराग्रह करते हैं और जबरदस्त प्रदर्शन आदि करने से भी नहीं हिचकिचाते। इन सभी बातों की पुष्टि में समाचारपत्रों में छपने वाली रोज की खबरें हैं जिनसे सभी परिचित हैं। ये कोई छिपी हुई या झूठी बातें नहीं है।

उनके खानपान बिगड़ते जा रहे है। उनके आचरण बिगड़ रहे है। आधुनिकता के नाम पर शराब व सिगरेट आदि का प्रयोग, जुआ व ताश खेलना आजकल के विद्यार्थियों की रुचियाँ हैं, ये उनकी हॉबीज हैं। इस प्रकार के छात्रों के आचरण से आज सभी परेशान हैं। लोग इस प्रकार के छात्रों व शिक्षा की भर्त्सना करते हैं। मुन्शी प्रेमचन्द ने आज की जैसी परिस्थिति को निम्नलिखित शब्दों में धिक्कारा है- "जो शिक्षा हमें निर्बलों को सताने के लिए तैयार करे, जो हमें भोग-विलास में डुबोए जो हमें दूसरों का रक्त पीकर मोटा होने का इच्छुक बनाए वह शिक्षा नहीं, भ्रष्टता है।"

आज छात्रों के आचरण से स्वयं उनके माता-पिता पेरशान हैं व शर्मिन्दा है।

अन्त में, समाप्त करने से पूर्व मैं आर्य पदाधिकारियों से यह अपील करूँगा कि वे अपने नौजवानों, किशोरों व कुमारों को भूल न जायें, उनके प्रति उदासीनता या उपेक्षावृत्ति न अपनायें। यदि वे इन्हें भुला बैठे तो वे ऐसी ही महान् भूल करेंगे जैसी कि आज कांग्रेस सरकार ने अपने छात्रों की अवहेलना करके की है। आर्यसमाज का भविष्य आर्यकुमारों पर आधारित है। इसीलिए समाजों की उन्नति के लिए यह परमावश्यक है कि कुमारों की ओर अधिक ध्यान दिया जाय।

तभी 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की योजना पूरी होगी।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

रोगियों का डाक्टर आर्यसमाज

यदि आप आर्यसमाज का औषधालय देखना चाहें तो सत्यार्थ प्रकाश के अन्तिम चार समुल्लासों का अध्ययन करें। इन चार समुल्लासों में आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द जी ने वेद के प्रतिकूल अनेक मत मतान्तरों का ऑपरेशन किया है और वह पूर्ण रूप से सफल हुआ है। इसका प्रमाण यह है कि आज भारत के सारे मतान्तर अपने नियमों को वेदानुकूल बनाने की चिन्ता में हैं। पौराणिक हिन्दू जाति में अनेक रोग उपस्थित थे जिनकी आर्यसमाज ने चिकित्सा की।

www.thearyasamaj.org

पिता

बरगद जैसी छाया देते रहे पिता।
जो भी सदा कमाया देते रहे पिता।।
अपने बच्चों को न कभी भूखा देखा,
अपना पेट छुपाया देते रहे पिता।।
माँगा एक रही इच्छा दो देने की,
कुछ भी नहीं बचाया देते रहे पिता।।
गुल्लक भर दो मैं कहता था बचपन में,
मुझको अपनी माया देते रहे पिता।।
कंधों पर बिठलाते घोड़ा बन जाते,
मजा बहुत ही आया देते रहे पिता।।
उंगली पकड़-पकड़ कर चलना सिखलाया,
खुशियों का सरमाया देते रहे पिता।।
आठ-आठ बच्चों हित खटे ठाठ देने,
नहीं सहारा पाया देते रहे पिता।।
सन्तानों हित स्वयं कवच और कुंडल थे,
तिल-तिल छीजी काया देते रहे पिता।।
अपने मुख का कोर दिया मुख में मेरे,
जब तक मैं न अघाया देते रहे पिता।।
बन कोल्हू का बैल जिन्दगी काट गये,
माँगा नहीं बकाया देते रहे पिता।।
चोट लगी थी मेरे दर्द हुआ उनके,
थपकी, पिया न खाया देते रहे पिता।।
जब तक रहे न कोई आँख तरेर सका,
सबका खोया-पाया देते रहे पिता।।
अपने घर में ही अजनबी बना डाला,
मैने लिया किराया देते रहे पिता।।
दानी-वरदानी पर ओछा वार किया,
मैंने सूद लगाया देते रहे पिता।।
झड़काया हड़काया तोड़े फल सारे,
फिर-फिर खूब हिलाया देते रहे पिता।।
हमने उनको वृद्धाश्रम मे भेज दिया,
फिर भी आशिष आया देते रहे पिता।।
अपना काँधा तक भी उन्हें न दे पाया,
सदा सहारा पाया देते रहे पिता।।
अपनी बाँहों के झूले में झेऐ दे,
मुझको खूब झुलाया देते रहे पिता।।
याद तुम्हारी सदा 'मनीषी' बनी रहे,
साये को भी साया देते रहे पिता।।

अज्ञानता

आर्यसमाज के प्रचार से पूर्व इस पौराणिक हिन्दू जाति में घोर अविद्या ने घर कर रखा था। लोग वेदों के नाम से भी अनभिज्ञ थे। आर्यसमाज ने इस रोग की चिकित्सा की और देश के अन्दर कन्या-गुरुकुल, गुरुकुल, कन्या पाठशाला, प्राइमरी स्कूल, हाई स्कूल और विश्वविद्यालयों का जाल बिछा दिया और वेद प्रचार के लिए जगह-जगह सभाएँ स्थापित कर दीं। आर्यसमाज के देखादेखी दूसरे लोगों ने विद्यालय खोले हैं, वह अलग हैं! आज लोगों में जो संस्कृत और वेद विद्या पढ़ने का चाव दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है यह आर्यसमाज रूपी डाक्टर की कृपा का परिणाम है।

www.thearyasamaj.org

समाचार

सभा प्रांगण में झण्डोत्तोलन

15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रांगण में, सभा मंत्री श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता जी द्वारा झण्डोतोलन किया गया। जिसमें उप प्रधान श्री ज्ञानेश्वर शर्मा, उप मंत्री संजय सत्यार्थी, कोषाध्यक्ष श्री सत्यवेद गुप्ता, श्री प्रेम कुमार आर्य, श्री विनोद शास्त्री, श्री उमेश प्रसाद, श्री प्रमोद कु० आदि उपस्थित हुए।

वेद प्रचार सम्पन्न

आर्य समाज खैरमा, जमूई में 18 से 20 अगस्त तक पावन वेद प्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें स्वामी मोक्षानन्द हिमाचल आचार्य बलवीर शास्त्री दिल्ली के प्रवचन हुए तो वहन धर्म रक्षिता के भजनोपदेश ने वक्ताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पं० संजय सत्यार्थी ने भी इस कार्यक्रम में भाग लेकर अपना उद्‌बोधन दिये। मूसलाधार वारिश में भी भारी संख्या में श्रोताओं ने भाग लिया।

उत्तरप्रदेश जनपद वलिया के निवासी ब्रह्मचारी ज्ञान प्रकाश के दादा जी के निधन पर पूर्ण वैदिक रीति से शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ इस अवसर पर संस्कृत व्याकरण के आचार्य ब्रह्मदत्त जी गुरूकूल कोला घाट हावड़ा बंगाल से पधारे आपके आचार्यत्व में विशाल यज्ञ सफल हुआ ब्रह्मचारी श्यामानंद आर्य वेद मंत्र स्वस्वर पाठ से जनता को आकर्षित किये अंत में पं० दयानन्द सत्यार्थी आर्य भजनोपदेशक द्वारा पौराणिक मृतक श्राद्ध पिण्ड दान आदि समाजिक पाखंड पर भजन प्रवचन की शैली से जमकर प्रहार हुआ सभी लोगों ने सराहना की तथा वेदिक धर्म की स्वीकार किया।

-मंत्री आर्यसमाज वेद प्रचार समिति,
सह तवार, वलिया, उत्तरप्रदेश

आर्यसमाज ढाका पं० चम्पारण के मंत्री श्री चन्द्रिका प्र० आर्य के पुत्र ने दिनांक 12 एवं 13 अगस्त 2013 को अपने गृह प्रवेश के अवसर पर पं० ध्रुव आर्य के अयार्यत्व में यज्ञ सम्पन्न किया इस अवसर पर पं० रामचन्द्र क्रान्तिकारी प्रवक्ता नेपाल तथा पं० दयानन्द सत्यार्थी संगीतार्य पधारे जिनके द्वारा लोकभजन शास्त्रीय संगीत एवं वैदिक सिद्धान्त के प्रभावशाली भजन हुए अन्त में देवरिया से आर्या नयन श्री प्रज्ञा भारती का भी भजन हुआ।

- चन्द्रिका प्रसाद आर्य

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज रमगढ़वा (सूगौली) पं० चम्पारण दिनांक 14 एवं 15 अगस्त 2013 को वेद प्रचार बड़े धुमधाम के साथ मचाया गया इस अवसर पर देवरिया वहन नैन श्री प्रज्ञा का मनमोहक भजन हुआ एवं श्री रामचन्द्र सिंह क्रान्तिकारी के प्रवचन तथा पं० ध्रुव आर्य प्रचारक का उद्बोधन शिक्षा पद हुए तथा पं० दयानन्द सत्यार्थी भजनोपदेश समस्तीपुर बिहार के द्वारा पन्द्रह अगस्त स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर देश भक्ति गीतों एवं शहीदों के इतिहास सुनाकर प्रभावित किये। मंत्री श्री चन्द्रिका प्रसाद आर्य प्रधान श्री भोला प्र० आर्य सरपंच श्री राम आर्य एवं विनय श्री का सहयोग अत्यन्त सराहनीय रहा।

- मंत्री, आर्यसमाज, रामगढ़वा, पं० चम्पारण, बिहार

योग ऋषि स्वामी रामदेव जी के सहपाठी मान्यवर स्वामी जयदेव नैष्ठिक जी के नेतृत्व में विशाल वैदिक महायज्ञ का कार्यक्रम दिनांक 27 अप्रैल से 6 मई 2013 को सुलतानगंज भागलपुर जिला के अन्तर्गत रसीदपुर ग्राम में धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द जी महाराज मेरठ उ० प्र० एवं श्रीमती अन्जुसुमन आर्या भजनोपदेशक डा० मणिकान्त शास्त्री मिश्रोलिया तथा वासुरीवादक तबला वादक के साथ समस्तीपुर से पधारे पं० दयानन्द सत्यार्थी आर्य भजनोपदेशक का धार्मिक भजन नारी शिक्षा से स्रोत प्रोत, भूत प्रेत जादू टोना आदि पर भजन हुए।

- निवेदक यज्ञ समिति समस्त सदस्यगण

www.thearyasamaj.org

आर्यसमाज गोला डुमरी चम्पारण बिहार दिनांक 9 से 11 जून 2013 तक वैदिक धर्म प्रचार समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पं० राम चन्द्र क्रान्तिकारी पं० दयानन्द सत्यार्थी भजनोपदेशक पं० ध्रुव आर्य श्री प्रचारक के भजन प्रवचन से बहुत प्रभावित हुए यज्ञ में अपार भीड़ के साथ लोग भाग लिए एवं रात्रि तक भजन प्रवचन सुनते रहे।

- ज्ञानप्रकाश, मंत्री आर्यसमाज, गोला डुमरी पं चम्पारण।

जिला नवादा मड़पो ग्राम के निवासी श्री राधे श्याम कुशवाहा के पिता स्व० जगदीश महात्मा के निधन पर दिनांक 19 एवं 20 अगस्त 2013 को शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ इस अवसर पर पं० दयानन्द सत्यार्थी भजनोपदेशक तथा बासुरी वादक रंजीत ठाकुर एवं उदयशंकर आर्य तबलावादक द्वारा लोकभाषा में भजन के माध्यम से कुरीतियों पर जमकर प्रहार किये।

- निवेदक शम्भू कुमार आर्य

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, जिला- बिजनौर (उ० प्र०) में आचार्या प्रियम्वदा वेद भारती जी के नेतृत्व में दिनांक 18 जुलाई से 28 जुलाई 2013 तक 'शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षण शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस अवसर पर समस्तीपुर, बिहार से पधारे आर्य भजनोपदेशक संगीताचार्य पं० दयानन्द सत्यार्थी द्वारा कन्याओं को स्वर-साधना का शास्त्रीय संगीत माध्यम से सम्पक् अभ्यास कराया गया जिनके आधार पर पौराणिक गीतों को निरस्त कर वैदिक ईश्वर-भक्ति का भजन-रागों पर आधारित गायन शैली बतायी गई जिसमें राग बहार, राग भैरवी, राग भैरव, राग यमन, राग मालकोश, राग चन्द्रकोश आदि प्रमुख रहे। भजन-गायन के साथ-साथ सरगम, तान, अलाप, आरोह-अवरोह, तराना, नोम तोम, तन नन धीं तनन, सम शून्य खाली पकड़ आदि का ज्ञान कराते हुए तीन ताल का पूर्ण अभ्यास कराया गया तथा सुगम संगीत की भी शिक्षा दी गयी। इसी क्रम में झपताल, एकताल, रूपक ताल, त्योरा ताल, कहरवा ताल, स्थायी, दादरा तालों का लिखित एवं प्रायोगिक ज्ञान कराया गया। प्रथम बार इस तरह के शास्त्रीय गायन-प्रशिक्षण प्राप्त कर कन्यायें अभिभूत हुई। फ लत: कन्याओं में संगीत विद्या सीखने की निरन्तर उत्सुकता बनी रही तथा सबका ध्यान आकृष्ट हुआ। मुख्य रूप से भाग लेने वाली गुरुकलीय कन्यायें सुश्री ब्र० कल्पना आर्या, कुमारी मनीषा आर्या, घोषा आर्या, बन्दना आर्या, शिवानी, अपाला, वरेण्यया, श्रेया शीतल, प्रीति, रक्षा, दिब्या, सूर्या, वेदांशी, तनु, कनिका, राखी, वैशाली, अंजली कुमारी आर्या इत्यादि प्रमुख रहीं। प्रशिक्षण शिविर के अन्तिम दिन गुरुकुल कमिटी के अध्यक्ष, मंत्री, संस्कृत अध्यापक श्री रामेश्वर दयाल शर्मा, श्री रणजीत तिवारी, आचार्या प्रियम्वदा वेदभारती एवं श्रीमती गार्गी आर्या के द्वारा संगीताचार्य पं० दयानन्द सत्यार्थी आर्य भजनोपदेशक तथा प्रसिद्ध तबलावादक श्री टीपू लाल आर्य को मन्त्रोच्चारणपूर्वक भव्य स्वागत-सम्मान के साथ विदाई दी गयी।

www.thearyasamaj.org

कुम्भ मेले के अवसर पर पाखण्ड खण्डिनी पता का गाड़ कर पाखण्ड का खण्डन कर सत्य का परचम लहराया। धैर्य के बल पर काशीपुरी पर चढ़ाई कर के अविधा-अन्धकार के रावण को पराजित कर दिया। प्रत्यक्षादि आठ प्रमाणों से सत्य को सिद्ध कर पावन संदेश दे दिया कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। धैर्य से ही जीवन में अभयता का संचार होता है, निर्बलता और निराशा के बादल हट जाते है।

इतिहास साक्षी है लगभग साढ़े तेइस सौ वर्ष पहले महापद्य नन्द राज्य करता था। उस समय देश स्वतंत्र था, समृद्धि और प्रगति के पथ पर भारत का राजकोश भरा पड़ा था। देश धन धान्य से पूर्ण था। उसी वंश में अन्तिम राजा धनानन्द बड़ा विलासी हो गया। अपना सारा समय नाच-गाने और रंगरलियाँ में बिताता था। इसकी अर्कमन्यता से प्रजा में रोश होना स्वाभाविक था। राज्य छिन्न-भिन्न हो रहा था। धनानन्द की क्रूरता से जनता परेशान थी। उसी वक्त सिकन्दर ने भी भारत पर आक्रमण कर दिया था। ऐसे ही वक्त में महर्षि चाणक्य का जन्म हुआ। चाणक्य ने धनानन्द के अत्याचार को अपनी आखों से देखा और उससे मुक्ति के उपाय सोचने लगे। कहा जाता है कि उपाय ढूंढ़ने में चाणक्य ने उसी धैर्य का सहारा लिया। वर्षों इन्तजार के बाद चाणक्य चन्द्रगुप्त का मेल हुआ, इसके वाद चन्द्रगुप्त को उन विषम परिस्थितियों का मुकाबला करने हेतु तैयार करने में भी काफी समय लगा। जब तक चन्द्र गुप्त पूर्ण तैयार नहीं हो गया तब तक चाणक्य ने धैर्य का परिचय दिया। जैसे ही चन्द्रगुप्त ने कमान सम्भाला, नीति के तहत धनानन्द का कत्ल करवाकर चन्द्रगुप्त को मगध का राजा बना दिया।

इस प्रकार धर्म के प्रथम सोपान धैर्य का पालन कर महर्षि चाणक्य ने भारत में राम-राज्य स्थापित कर दिया। राम ने भी धैर्य के धारण से ही मर्यादा पुरुषोत्तम कहलायें। योगीराज कृष्ण ने तो धर्म का संदेश ही महाभारत में दिया था।

अतः हमे आत्म सम्मान, स्वाभिमान, राष्ट्र, धर्म की रक्षा के लिये धर्म के सार को समझते हुए धर्म संस्थापनार्थ धर्म के इस पुष्प की सुरभि से जीवन सफल और सुगंधित बनायें यही महापुरुषों की प्रेरणा है।

पं० संजय सत्यार्थी

सह-संपादक

www.thearyasamaj.org

प्रेषक,
सभा-मंत्री,
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला
पटना-८०० ००४

मुद्रित सामग्री

सेवा में,
श्री/मेसर्स.....................
मो०.....................
पो०.....................
जिला.....................

(प्रेषिती के न मिलने पर यह अंक प्रेषक को ही लौटा दें।)

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सभा प्रांगण में झण्डोत्तोलन करते सभा मंत्री श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता एवं अन्य।

स्वत्वाधिकारी, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा,, श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला, पटना-4 के लिए श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता (मंत्री) द्वारा जय उमा प्रिन्टर्स, पटना द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।